

आधुनिक इतिहास

सिविल सेवा एवं राज्य स्तरीय सेवाओं
की परीक्षाओं हेतु

प्रशासनिक सेवाओं
की तैयारी में उपयोगी



आधुनिक इतिहास

सिविल सेवा एवं राज्य स्तरीय सेवाओं
की परीक्षाओं हेतु



© 2019 Cengage Learning India Pvt. Ltd.

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this work covered by the copyright herein may be reproduced, transmitted, stored, or used in any form or by any means graphic, electronic, or mechanical, including but not limited to photocopying, recording, scanning, digitizing, taping, Web distribution, information networks, or information storage and retrieval systems, without the prior written permission of the publisher.

For permission to use material from this text or product, submit all requests online at

www.cengage.com/permissions

Further permission questions can be emailed to

India.permission@cengage.com

ISBN-13: 978-93-86668-96-7

ISBN-10: 93-86668-96-3

Cengage Learning India Pvt. Ltd.

418, F.I.E., Patparganj

Delhi 110092

Cengage Learning is a leading provider of customized learning solutions with office locations around the globe, including Australia, Brazil, India, Mexico, Singapore, United Kingdom and United States. Locate your local office at: www.cengage.com/global

Cengage Learning products are represented in Canada by Nelson Education, Ltd.

For product information, visit www.cengage.co.in

विषय-सूची

प्राक्कथन	xv
आभार-पत्रि	xvii
वीडियो-सूची	xix
पिछले वर्षों के प्रश्नों का अध्याय अनुसार विश्लेषण	xxi

1

यूरोपियों का आगमन

पुर्तगाली	1
डच	1
अंग्रेज	2
फ्रांसीसी	2
डेनिश	2
अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिद्वन्द्विता	3
कर्नाटक युद्ध	3
बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना	4
पॉन्डिचेरी की अनोखी दास्तान: उपनिवेशीय शासन में निरंतर बदलाव	5
अभ्यास प्रश्न	5
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	7

2

उपनिवेशवाद

उपनिवेशवाद के चरण	9
भू-राजस्व व्यवस्था	10
1. जमींदारी व्यवस्था	10
2. रयतवाड़ी व्यवस्था	10
3. महालवाड़ी व्यवस्था	10
कृषि का व्यापारीकरण	11
निष्कर्ष	11
भारतीय उद्योग पर ब्रिटिश नीतियों का प्रभाव	11
1. भारत का विऔद्योगिकीकरण	12
2. आधुनिक कारखानों की अनुपस्थिति	12

धन के बहिर्गमन का सिद्धांत या धन के निष्कासन का सिद्धांत	12
धन के निष्कासन के स्रोत	13
1. प्रत्यक्ष स्रोत	13
2. अप्रत्यक्ष स्रोत	13
अभ्यास प्रश्न	14
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	16

3

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	19
सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	19
सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के उद्देश्य	19
सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की विशेषताएं	19
हिन्दू धर्म से संबंधित सुधार आंदोलन	19
ब्रह्म समाज	19
प्रार्थना समाज आंदोलन	22
आर्य समाज आंदोलन	22
रामकृष्ण मिशन	24
थियोसोफिकल सोसाइटी	25
भारत धर्म महामंडल	26
अन्य धार्मिक सुधार आंदोलन	26
पारसी धर्म सुधार आंदोलन	26
सिख धार्मिक सुधार आंदोलन	26
इस्लामी धार्मिक सुधार आंदोलन	27
राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन	28
वहाबी आंदोलन	28
कूका आंदोलन	28
अन्य सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन	28
यंग बंगाल आंदोलन	28
राधास्वामी आंदोलन	29
जाति-आधारित सुधार आंदोलन	29
जाति व्यवस्था में सुधार के लिए विभिन्न आंदोलन	29
अखिल भारतीय जाति आंदोलन	29
ब्राह्मणवाद के विरोध में अनुसूचित जातियों के आंदोलन	31
राजनीतिक-जाति आंदोलन	31
महिला-संबंधित सुधार आंदोलन	32
महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए योगदान देने वाले प्रमुख समाज सुधारक और संगठन	32

महिला शिक्षा के लिए योगदान	33
अभ्यास प्रश्न	38
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	43

4

किसान और जनजातीय आंदोलन 47

जनजातीय आंदोलन	47
जनजातीय आंदोलनों की प्रकृति	47
जनजातीय आंदोलनों के कारण	47
महत्वपूर्ण जनजातीय आंदोलन	47
खासी विद्रोह (मेघालय)	47
खोण्ड विद्रोह (1837-1856) (उड़ीसा)	48
संथाल विद्रोह (1856-1857) (झारखंड)	48
मुंडा विद्रोह (बिहार और झारखंड)	49
रम्पा विद्रोह (1922-1924) (आंध्र प्रदेश)	49
नागा आंदोलन (1905-1931) (मणिपुर)	49
ताना भगत आंदोलन (झारखंड)	50
आदिवासी आंदोलनों की कमियां	50
किसान आंदोलन	50
किसान आंदोलनों की प्रकृति	50
महत्वपूर्ण किसान आंदोलन	50
फकीर और संन्यासी विद्रोह (1770-1800)	50
अहोम विद्रोह	51
भील विद्रोह	51
कोली विद्रोह	51
पोलिगारो का विद्रोह	51
नील आन्दोलन (1856-1858)	51
दक्कन विद्रोह (1875-1877)	52
वासुदेव बलवन्त फड़के विद्रोह (1876-1879)	52
रामोसी विद्रोह	52
पबना विद्रोह	52
पागलपंथी विद्रोह	52
मोपला/ माप्पिला विद्रोह (1836-1921)	52
साराबंदी (कर रहित) अभियान	53
बारदोली सत्याग्रह	53
एका और किसान सभा आंदोलन	54
तेभागा आंदोलन (1946-1947)	54

तेलंगाना आंदोलन (1946-1952)	54
भूदान आंदोलन	54
अभ्यास प्रश्न	55
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	58

5

रियासतों के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति	59
रियासतों के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति	59
ईस्ट इंडिया कंपनी का भारतीय राज्यों से समानता के लिए संघर्ष (1740-1765)	59
घेरे की नीति (Policy of Ring Fence) (1765-1813)	59
अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (Policy of Subordinate Isolation) (1813-1834)	60
रियासतों के ब्रिटिश साम्राज्य में विलय की नीति (1834-1858)	60
अधीनस्थ एकीकरण की नीति (Policy of Subordinate Union) (1858-1935)	61
समानता संघात्मक नीति (1935-1947)	61
अभ्यास प्रश्न	62
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	63

6

1857 का विद्रोह	65
1857 के विद्रोह के कारण	65
1. आर्थिक कारण	65
2. राजनीतिक कारण	65
3. प्रशासनिक कारण	66
4. सामाजिक-धार्मिक कारण	66
5. तात्कालिक कारण	66
1857 के विद्रोह की शुरुआत और प्रसार	66
1857 विद्रोह के मुख्य केंद्र	66
1857 के विद्रोह का दमन	67
1857 के विद्रोह की विफलता के कारण	67
1857 विद्रोह के परिणाम	67
1857 विद्रोह की प्रकृति	68
अभ्यास प्रश्न	69
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	71

7

ब्रिटिश गवर्नर जनरल

73

महत्वपूर्ण गवर्नर जनरल	73
वॉरेन हेस्टिंग्स (1773-1785)	73
लॉर्ड कॉर्नवॉलिस (1786-1793)	74
लॉर्ड वेलेज़ली (1798-1805)	75
लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)	75
लॉर्ड विलियम बेंटिक (1828-1835)	75
लॉर्ड चार्ल्स मेटकॉफ (1835-1836)	76
लॉर्ड हार्डिंग (1844-1848)	77
लॉर्ड डलहौज़ी (1848-1856)	77
लॉर्ड कैनिंग (1856-1862)	79
लॉर्ड मेयो (1869-1872)	80
लॉर्ड लिटन (1876-1880)	80
लॉर्ड रिपन (1880-1884)	81
लॉर्ड डफरिन (1884-1888)	82
लॉर्ड कर्ज़न (1899-1905)	82
अभ्यास प्रश्न	84
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	92

8

स्वतंत्रता संग्राम का आरंभ

95

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व के राजनीतिक संघ	95
दक्षिण भारत में राजनीतिक संघ	95
पश्चिम भारत में राजनीतिक संघ	95
पूर्व भारत में राजनीतिक संघ	96
इंडियन एसोसिएशन	96
इंडियन नेशनल यूनियन	96
इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना	96
भारतीय परिषद् अधिनियम, 1892	98
कांग्रेस के पहले 20 वर्ष या कांग्रेस का उदारवादी (या नरमपंथी) चरण (1885-1905)	99
कांग्रेस ने उदारवादी नीति क्यों अपनाई?	99
उदारवादी कांग्रेस की मांगें	99
इन मांगों के प्रति ब्रिटिश सरकार का दृष्टिकोण	100
आधुनिक राष्ट्रवाद	100
कांग्रेस: एक सेफ्टी वाल्व?	101

उग्र राष्ट्रवाद	102
नव राष्ट्रवाद के लिए जिम्मेदार कारक	102
अभ्यास प्रश्न	107
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	109

9

राष्ट्रीय आंदोलन (1905-918) 113

बंगाल का विभाजन	113
उदारवादियों द्वारा बंगाल के विभाजन के खिलाफ किया गया आंदोलन (1903 से 1905)	113
उग्र राष्ट्रवादियों द्वारा किए गए आंदोलन: स्वदेशी-बहिष्कार आंदोलन	114
आंदोलन का प्रसार	114
1908 में स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के अंत के लिए जिम्मेदार कारक	115
स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का आलोचनात्मक मूल्यांकन	116
स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन की कमियां	116
उग्रपंथी राष्ट्रवाद की कमियां	117
कांग्रेस में विभाजन	117
कांग्रेस का सूरत अधिवेशन (1907)	117
मॉर्ले मिंटो सुधार या भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909	118
द्वितीय दिल्ली दरबार, 1911	119
बंगाल के विभाजन को रद्द करने की घोषणा	119
कलकत्ता की बजाए, दिल्ली को राजधानी बनाया गया	119
प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रवादियों की अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति नीति	120
होम रूल आन्दोलन (1916)	120
होम रूल आंदोलन के परिणाम	121
अंबिका चरण मजूमदार की अध्यक्षता में लखनऊ अधिवेशन, 1916	121
खिलाफत मुद्दा	121
कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौते या लखनऊ संधि की शर्तें	121
लॉर्ड मांटेग्यू की घोषणा	122
अभ्यास प्रश्न	126
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	133

10

महात्मा गांधी 135

गांधी जी, दक्षिण अफ्रीका में	135
संघर्ष का उदारवादी चरण (1894-1906)	135
संघर्ष का सत्याग्रह चरण (1906-1914)	135

सत्याग्रह	136
महात्मा गांधी के सत्याग्रह के तरीके	136
भारत में महात्मा गांधी	137
चंपारण सत्याग्रह, 1917 (प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन)	138
अहमदाबाद मिल हड़ताल, 1918 (पहली भूख हड़ताल)	139
खेड़ा सत्याग्रह, गुजरात (1918, पहला असहयोग आंदोलन)	139
अभ्यास प्रश्न	140
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	141

11

वामपंथी तथा दक्षिणपंथी गुट 143

राजनीतिक विचारधाराओं का स्पष्टीकरण: वामपंथी, दक्षिणपंथी तथा केंद्रीय	143
दक्षिणपंथी गुट: मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा पूंजीवादी	143
मुस्लिम लीग	143
हिंदू महासभा	144
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस)	144
पूंजीवादी वर्ग	145
भारत में रूसी क्रांति का प्रभाव: वामपंथी गुटों का उद्भव	145
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.)	146
श्रमिक संघ आंदोलन	147
अभ्यास प्रश्न	148
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	150

12

क्रांतिकारी 151

प्रथम विश्व युद्ध तक भारत की महत्वपूर्ण क्रांतिकारी संस्थाएँ	151
महाराष्ट्र	151
बंगाल	152
पंजाब	152
भारत के बाहर क्रांतिकारी आंदोलन	153
गदर पार्टी आंदोलन	153
मैडम भीकाजी कामा	155
राजा महेंद्र प्रताप	155
क्रांतिकारी आतंकवाद का दूसरा चरण (प्रथम विश्व युद्ध के बाद)	155
पंजाब-यूपी-बिहार	156
हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन	156

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	156
बंगाल	158
इंडियन रिपब्लिकन आर्मी	158
अभ्यास प्रश्न	161
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	166

13

राष्ट्रीय आंदोलन (1919-1928) 169

रॉलेट एक्ट और रॉलेट एक्ट विरोधी सत्याग्रह	169
जलियांवाला बाग हत्याकांड	169
जलियांवाला बाग हत्याकांड पर प्रतिक्रिया	169
भारत सरकार अधिनियम 1919 या मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार	170
1919 के अधिनियम के प्रति कांग्रेस की प्रतिक्रिया	171
कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन, सितंबर 1920	172
नागपुर अधिवेशन, दिसंबर 1920	172
असहयोग आंदोलन	173
आंदोलन का प्रसार	173
कांग्रेस अधिवेशन, 1921	174
चौरी-चौरा की घटना	174
गांधीजी ने असहयोग आंदोलन क्यों बंद किया?	174
असहयोग आंदोलन का आलोचनात्मक मूल्यांकन	175
स्वराज पार्टी या कांग्रेस खिलाफत स्वराजिस्ट पार्टी (सी.के.एस.पी)	175
स्वराज पार्टी का चुनाव घोषणापत्र	176
स्वराज पार्टी की उपलब्धियाँ	176
स्वराज पार्टी के सदस्यों में विभाजन	177
प्रजा आंदोलन एवं प्रजा मंडल आंदोलन	177
प्रजा मंडल आंदोलन	177
अखिल भारतीय इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कॉन्फ्रेंस	177
बटलर समिति	177
कांग्रेस और प्रजा आंदोलन के बीच संबंध	178
प्रजा आंदोलन का महत्व	178
साइमन कमीशन	178
साइमन कमीशन का विरोध क्यों किया गया था?	179
साइमन कमीशन विरोधी आंदोलन	180
लॉर्ड बर्किनहेड द्वारा चुनौती	180
नेहरू रिपोर्ट (1928)	180
दिल्ली प्रस्ताव	181

जिन्ना की मांगे	181
अभ्यास प्रश्न	182
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	188

14

राष्ट्रीय आंदोलन (1929-1939) 193

लाहौर कांग्रेस संकल्प	193
दांडी मार्च/नमक सत्याग्रह (12 मार्च 1930 - 5 अप्रैल 1930)	194
नमक को मुख्य मुद्दे के रूप में क्यों चुना गया था?	195
सविनय अवज्ञा आंदोलन का एजेंडा	195
आंदोलन का प्रसार	195
गांधी-इरविन संधि	197
गांधी-इरविन संधि के नियम एवं शर्तें	197
गांधी-इरविन संधि पर प्रतिक्रिया	197
गोल मेज सम्मेलन (या राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस)	198
प्रथम गोल मेज सम्मेलन (नवंबर 1930 - जनवरी 1931)	198
दूसरा गोल मेज सम्मेलन (सितंबर - दिसंबर 1931)	198
सविनय अवज्ञा आंदोलन की बहाली	199
तीसरा गोलमेज सम्मेलन (नवंबर - दिसंबर 1932)	199
कराची कांग्रेस अधिवेशन, मार्च 1931	199
कराची अधिवेशन में पास किए गए महत्वपूर्ण प्रस्ताव	199
मैकडोनाल्ड अवॉर्ड या साम्प्रदायिक अधिनिर्णय, 1932	199
पूना समझौता	200
भारत सरकार अधिनियम, 1935	200
1937 के चुनाव	201
1937 के चुनावों के लिए कांग्रेस का घोषणापत्र	202
चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन	202
कांग्रेस के मंत्रियों द्वारा किए गए काम	202
सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन, 1938	203
त्रिपुरी अधिवेशन, 1939	203
द्वितीय विश्व युद्ध भागीदारी पर राष्ट्रीय प्रतिक्रिया	204
अभ्यास प्रश्न	205
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	213

15

राष्ट्रीय आंदोलन: स्वतंत्रता और विभाजन (1939-1947) 217

अगस्त प्रस्ताव, 1940	217
----------------------	-----

अगस्त प्रस्ताव पर प्रतिक्रियाएं	217
व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940-1941)	218
क्रिप्स मिशन योजना (मार्च, 1942)	218
क्रिप्स मिशन प्रस्ताव किस तरह से अगस्त प्रस्ताव से अलग था?	219
क्रिप्स प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया	219
भारत छोड़ो आंदोलन	220
8 अगस्त 1942 को ग्वालिया टैंक ग्राउंड, बॉम्बे में अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक	220
निर्देश	220
भारत छोड़ो आंदोलन के तीन चरण	220
भारत छोड़ो आंदोलन का मूल्यांकन	222
सी. राजगोपालाचारी फार्मूला (1944)	222
राजगोपालाचारी फार्मूला पर प्रतिक्रियाएं	223
देसाई-लियाकत समझौता, 1945	223
वेवेल योजना 1945	223
शिमला सम्मेलन	224
शिमला सम्मेलन की विफलता	224
इंडियन इंडिपेंडेंस लीग	224
इंडियन लीजन	225
आज़ाद हिंद फौज या इंडियन नेशनल आर्मी	225
आई.एन.ए. आंदोलन	226
आई.एन.ए. आंदोलन का प्रभाव	226
रॉयल भारतीय नौ सेना रेटिंग्स आंदोलन (या रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह), फरवरी 1946	226
1946 के चुनाव	227
कांग्रेस का प्रदर्शन	227
मुस्लिम लीग का प्रदर्शन	227
चुनाव परिणाम का प्रभाव	227
कैबिनेट मिशन योजना (CABINET MISSION PLAN)	227
कैबिनेट मिशन योजना पर प्रतिक्रिया	229
एटली की घोषणा (20 फरवरी 1947)	229
माउंटबेटन योजना (3 जून 1947)	230
द्विराष्ट्र सिद्धांत का विकास	231
अभ्यास प्रश्न	238
पिछली प्रारंभिक परीक्षा	248

16	शिक्षा का विकास	253
	शैक्षणिक सुधार	253
	सैडलर विश्वविद्यालय आयोग (1917-1919)	253
	हार्टोग समिति, 1928	254
	बुनियादी या वर्धा शिक्षा योजना, 1937	254
	सारजेंट शिक्षा योजना, 1944	254
	अभ्यास प्रश्न	255
	समाधान: अभ्यास प्रश्न और पिछली प्रारंभिक परीक्षा	257
	मुख्य परीक्षा में उत्तर लिखने की रणनीति	285
	पिछले वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा) समाधान के साथ	293
	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन कालानुक्रम	311

प्राक्कथन

आईएएस बनने का सपना अपनी आंखों में संजोए 'कई' उम्मीदवारों से आपकी मुलाकात या परिचय हुआ होगा, जो कई वर्षों से इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए तत्पर हैं और उनकी इसके प्रति प्रतिबद्धता भी निरंतर बनी हुई है। हालांकि, 'कई' शब्द इनकी व्याख्या करने के लिए काफी नहीं होगा, क्योंकि इनकी संख्या लाखों में है। लेकिन जब हम प्रतिबद्धता की बात करते हैं, तो हम इसके अर्थ को भलीभांति समझते भी हैं और इसका आदर भी करते हैं। ये युवा पुरुष और महिलाएं इस सपने को पूरा करने के लिए अपने सारे कीमती युवा वर्षों का बलिदान करने के लिए तैयार हैं, जिसके साथ-साथ यह अपनी नींद, आराम और यहां तक कि सामान्य जीवन का त्याग करने को भी तैयार हैं और उनके इस त्याग का केवल एकमात्र लक्ष्य है—**भारतीय प्रशासनिक सेवाएं**।

अफसोस की बात यह है कि अध्ययन के अंतहीन घंटों और नींद से सराबोर नजरों के बावजूद इन उम्मीदवारों की बड़ी संख्या यह सपना पूरा करने से कोसों दूर है। जब हमने यह जानने का प्रयास किया कि 'ऐसा क्यों है', प्रतिक्रियाएं लगभग समान थीं।

“विषय इतना विशाल था कि पढ़ने के लिए बहुत कुछ था और मैं इसे कभी पूरा नहीं कर सका।”

“मैंने बहुत कुछ पढ़ा लेकिन उसे याद नहीं रख सका।”

“मैंने पढ़ा कुछ और, लेकिन परीक्षा में पूछा कुछ और गया।”

“मैंने पढ़ना जारी रखा लेकिन पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों को हल करने या अभ्यास परीक्षा देने का प्रयास नहीं किया।”

“तैयारी/जानकारी प्राप्त करने के लिए कई स्रोत जैसे कि किताबें, कोचिंग क्लास और इंटरनेट का अनुसरण करना मुश्किल था; आखिर दिन में केवल 24 घंटे होते हैं।”

“मेरी अलमारी बहुत सारी किताबों से भरी हुई थी, लेकिन मैं मुश्किल से कुछ को ही पूरा कर पाया था।”

ऊपर कहे गए सभी कथनों ने हमें स्पष्ट रूप से एक चुनौतीपूर्ण समस्या पेश की, परंतु हमने इसे ना केवल हल करने का प्रयास किया, बल्कि हमने समग्र समाधान पर ध्यान केंद्रित किया, जो थे—विद्वत्ता हासिल करना और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करना।

यह इस उद्देश्य के साथ है कि हमने—PrepMate, Cengage India के साथ मिलकर—एक व्यापक शिक्षण मॉडल विकसित किया है जो प्रिंट और डिजिटल माध्यम का संयोजन है ताकि अधिकांश उम्मीदवारों के उपर्युक्त मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सके।

प्रिंट-डिजिटल मॉडल के बारे में

यह मॉडल यूपीएससी परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए पुस्तकों की एक श्रृंखला प्रदान करता है। निम्नलिखित अनूठी विशेषताओं के कारण यह पुस्तकें अन्य उपलब्ध पुस्तकों से अलग हैं:

- हम एक वैचारिक दृष्टिकोण रखते हैं, सरल भाषा का उपयोग करते हैं, आरेखों के माध्यम से अवधारणाओं की व्याख्या करते हैं, पर्याप्त उदाहरण उद्धृत करते हैं, एक पाठक अनुकूल प्रारूप में प्रासंगिक प्रश्न पूछते हैं—यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन पुस्तकों को समयबद्ध तरीके से पढ़ा और समेकित किया जा सके।
- हाल ही के वर्षों में यूपीएससी परीक्षाओं की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए विषय सामग्री विशेष रूप से बनाई गई है। हमने प्रत्येक अध्याय के पश्चात पिछले वर्षों के प्रश्न (समाधान के साथ) भी शामिल किए हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं जो परीक्षा की पूर्ण तैयारी करने के लिए पर्याप्त हैं।
- पुस्तक श्रृंखला में 'उत्तर कैसे लिखना है' के बारे में अतिरिक्त जानकारी भी शामिल है जिससे आपका मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए दृष्टिकोण विकसित होगा। हमने प्रश्नों को हल करके उत्तर लिखने का ढंग समझाया है और 'श्रेष्ठ उत्तर प्रस्तुत करने की शैली' भी सुझाई है।
- हमने एक विशिष्ट विषय पर विद्वत्ता प्राप्त करने के लिए सभी अध्याय-सामग्री को एक पुस्तक में समाहित करने का प्रयास किया है।

आम तौर पर, एक उम्मीदवार एक पुस्तक खरीदता है, लेकिन उसे लेखकों से संपर्क करने का अवसर कभी नहीं मिलता है। हमारा मानना है कि उम्मीदवारों और लेखकों के बीच संपर्क, उम्मीदवारों के विद्वत्ता प्राप्त करने और प्रेरणा के लिए महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि हमने आपके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए एक एप्लीकेशन और एक वेब पोर्टल विकसित किया है जो आपको आपकी तैयारी के दौरान निरंतर समर्थन प्रदान करता है।

यह इस डिजिटल तत्व के माध्यम से है कि हम निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करते हैं:

1. महत्वपूर्ण और कठिन विषयों पर वीडियो
2. उत्तर लेखन अभ्यास
3. दैनिक प्रारंभिक परीक्षा से संबंधित प्रश्नोत्तरी
4. साक्षात्कार की तैयारी में सहायता
5. नियमित अद्यतन
6. दैनिक सामयिकी मामले
7. मासिक सामयिकी मामलों पर पत्रिका
8. रेडियो समाचार विश्लेषण
9. शैक्षणिक वीडियो
10. पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र और समाधान
11. नि: शुल्क अध्ययन सामग्री

आपके सपने को सफल करने की दिशा में हम आपके साथी बनने के लिए तत्पर हैं।

यदि आपका कोई विशिष्ट प्रश्न या रचनात्मक प्रतिक्रिया है, तो आप हमारे साथ info@prepmate.in पर ई-मेल के माध्यम से साझा कर सकते हैं।

आभार-पूर्ति

“हम जो कुछ भी पाना चाहते हैं वह हम एक साथ काम किए बिना प्राप्त नहीं कर सकते”

PrepMate द्वारा तैयार किया गया पूरा यूपीएससी मॉडल कई वर्षों का, बहुत से लोगों की लगातार उद्घावना और विचारावेश का परिणाम है। हम ईमानदारी से उनके मूल्यवान योगदान का धन्यवाद करते हैं। मैं, PrepMate Edutech का संस्थापक, शुभम सिंगला, आप सभी का इस पूरी परियोजना में मेरे साथ बने रहने के लिए आभारी हूँ। रजिंदर पॉल सिंगला, निर्मल सिंगला, रमनिक जिंदल, शरत गुप्ता, सुभाष सिंगला और विजय सिंगला—आपके निरंतर समर्थन और प्रेरणा के लिए धन्यवाद।

हम मनींदर मान, सन्दीप सिंह गढ़ा को भी धन्यवाद देना चाहेंगे जिन्होंने पहली बार इस मॉडल की कल्पना करने में और फिर इस कल्पना को सहक्रियात्मक प्रिंट-डिजिटल मॉडल का प्रारूप देने में हमारी मदद की—बिना आपके हम अपने प्रतिस्पर्धात्मक आधार को विकसित करने में अक्षम रहते।

रणनीति का कार्यान्वयन अक्सर चुनौतीपूर्ण साबित हो सकता है और डिजिटल घटक का विकास हमारी कल्पना की तुलना में काफी कठिन साबित हुआ। लेकिन हमारी तकनीकी टीम हमारे सपनों को सक्षम करने और सर्वोत्तम प्रदर्शन प्रदान करने पर केंद्रित थी और उन्होंने निश्चित रूप से इसे पूरा किया। वेबसाइट और एप्लिकेशन दोनों के परीक्षण के लिए एक विशिष्ट उल्लेख के साथ, हम सुरभि मिश्रा, पार्थ और तनवीर को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने कठिनाइयों के बावजूद धैर्यपूर्वक और प्रभावी ढंग से अपना कार्य किया।

हमारी ग्राफिक्स डिज़ाइन टीम, संदीप, सुखजिंदर और रोशनी, की सहायता के बिना हमारी वीडियो और पुस्तकें संभव नहीं हो सकती थीं, जिन्होंने बनाए गए ऑडियो-विजुअल की सर्वश्रेष्ठता को सुनिश्चित करने के लिए अंतहीन रूप से कार्य किया।

यह कहना काफी नहीं होगा कि मौजूदा विषय सामग्री का उद्गम और निरीक्षण तथा अनुपलब्ध विषय सामग्री की उत्पत्ति, इस परियोजना का कितना महत्वपूर्ण हिस्सा है और हमारे अध्ययन मॉडल का मूलभूत आधार है। विषय सामग्री योगदानकर्ताओं की हमारी टीम के बिना यह संभव नहीं था: ईशा गुप्ता, शैली जिंदल, गुरदीप कौर, सुरभि मिश्रा, शैफी गर्ग, दीपिका अरोड़ा, सुनील, भूपिंदरजीत सिंह, शांतनु, तनवीर, अनमोल, क्रिती, तान्या, साहिल, सूरज और दिलशाद, जिन्होंने उत्कृष्टता प्राप्त करने के अपने प्रयास में कोई कमी नहीं छोड़ी—आपके महत्वपूर्ण योगदानों को आभारी रूप से स्वीकार किया जाता है।

हम अपने कर्मचारियों, गीता, जितेंद्र, मनोज और पिंकी को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं, जिन्होंने हमें श्रमशील कार्य का निष्पादन करने में सहायता की, यानी हमारी हस्तलिखित किताबों को टाइप करना—आपके योगदान की ईमानदारी से सराहना की जाती है।

यह अत्यावश्यक है कि हम ईशा गुप्ता, शैली जिंदल, अंजुम दीवान, राजेश गोयल, शिखा शर्मा और रविंदर इंदौरा को उनकी आलोचनात्मक पर रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए तथा विकास प्रक्रिया के दौरान, बाद में की गई त्रुटियों की पहचान तथा सुधार करने के लिए धन्यवाद दें।

हम इस पुस्तक को प्रकाशित करने की प्रक्रिया में Cengage India की पूरी संपादकीय टीम द्वारा पहल और समर्थन को ईमानदारी से स्वीकार करते हैं।

“अकेले हम कितना कम हासिल कर सकते हैं, साथ में कितना ज्यादा...”

PrepMate

वीडियो-सूची

1.	आधुनिक इतिहास कैसे तैयार करें?
2.	भू-राजस्व व्यवस्था
3.	महिला-संबंधित सुधार आंदोलन
4.	जनजातीय आंदोलन
5.	किसान आंदोलन
6.	1857 का विद्रोह
7.	असहयोग आंदोलन
8.	सविनय अवज्ञा आंदोलन
9.	भारत छोड़ो आंदोलन
10.	1773 से 1935 तक संवैधानिक सुधार

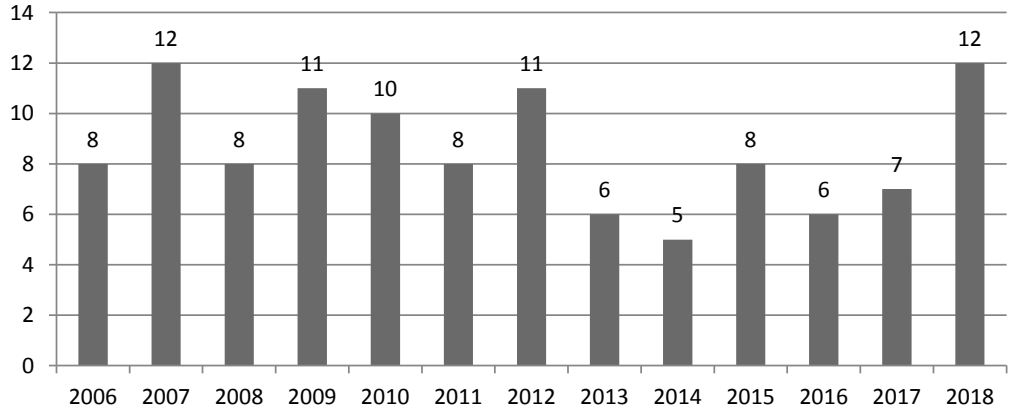
पिछले वर्षों के प्रश्नों का अध्याय अनुसार विश्लेषण

अध्याय	2018	2017	2016	2015	2014	2013	2012	2011	2010	2009	2008	2007	2006	कुल
1. यूरोपियों का आगमन									1			2	1	4
2. उपनिवेशवाद	2	1		1			2	1			1			8
3. सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन			2				2			1		2	1	8
4. किसान और जनजातीय आंदोलन	2					1						1	1	5
5. रियासतों के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति	1													1
6. 1857 का विद्रोह												1	1	2
7. ब्रिटिश गवर्नर जनरल	3				1	1		1	2			2	2	12
8. स्वतंत्रता संग्राम का आरंभ	1	1		1			1	1			2			7

Contd.

9. राष्ट्रीय आंदोलन (1905-1918)	1		2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	11
10. महात्मा गांधी	1						2	1	1						1		6
11. वामपंथी तथा दक्षिणपंथी गुट		1															2
12. क्रांतिकारी		1														1	3
13. राष्ट्रीय आंदोलन (1919-1928)		2	1	2				1	2	1	1	1	1	1	1		13
14. राष्ट्रीय आंदोलन (1929-1939)	1								4							1	11
15. राष्ट्रीय आंदोलन: स्वतंत्रता और विभाजन (1939-1947)		1	1	1	1	2				2	2	5	3	1			19
16. शिक्षा का विकास																	
कुल	12	7	6	8	5	6	11	8	10	11	8	12	8	12	8	112	

आधुनिक इतिहास के तहत पूछे गए प्रश्नों की संख्या



यूरोपियों का आगमन

भूमि मार्ग के माध्यम से भारत और यूरोप के मध्य वाणिज्यिक संबंध बहुत पुराने थे। 1498 में वास्को डी गामा ने केप ऑफ गुड होप से होते हुए नये समुद्री मार्ग की खोज की। तत्पश्चात, कई व्यापारिक कम्पनियां भारत आईं और उन्होंने अपने व्यापारिक केंद्रों की स्थापना की। उन्होंने भारत में व्यापारियों के रूप में प्रवेश किया था, लेकिन समय के साथ-साथ उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया और अंततः अपनी बस्तियों की स्थापना की। यूरोपीय शक्तियों के बीच की वाणिज्यिक प्रतिद्वन्द्विता के कारण राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता भी उत्पन्न हुई। अंततः ब्रिटिश भारत में अपना शासन स्थापित करने में सफल रहे।

पुर्तगाली

पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा 17 मई 1498 को कालीकट के बंदरगाह पर पहुंचा। कालीकट के शासक, ज़मोरिन ने गर्मजोशी से उसका स्वागत किया। अगले वर्ष, वह पुर्तगाल लौट गया। सन् 1500 में पेड्रो अलवरेज कैब्राल नामक एक पुर्तगाली भारत आया तथा सन् 1502 में वास्को डी गामा दूसरी बार भारत आया। पुर्तगालियों ने कालीकट, कन्नूर और कोचीन में व्यापारिक केंद्रों की स्थापना की।

भारत में पुर्तगालियों का पहला गवर्नर फ्रांसिस्को-डी-अल्मेडा था। बाद में 1509 में, अल्बुकर्क को भारत के पुर्तगाली क्षेत्र का गवर्नर बनाया गया था। 1510 में, उसने बीजापुर के शासक से गोवा को छीन लिया था। इसके बाद, गोवा भारत में पुर्तगाली बस्तियों की राजधानी बन गया। उसने कालीकट में एक किला भी बनाया। उसने अपने देशवासियों को भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया। 1515 में अल्बुकर्क की मृत्यु हो गई। उस समय पुर्तगाली भारत में सबसे मजबूत नौसैनिक शक्ति थे।

लेकिन, 16वीं शताब्दी के अंत तक भारत में पुर्तगालियों की शक्ति में गिरावट आई थी। 17वीं सदी तक उन्होंने गोवा, दीव और दमन को छोड़कर, भारत में अपने सारे क्षेत्र खो दिए थे।

डच

डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 में हुई थी। इस कंपनी के व्यापारी 17वीं शताब्दी में भारत आए और उन्होंने मसूलिपटनम (मछलीपट्टनम), पुलीकट, नागापट्टनम् आदि में अपनी बस्तियां स्थापित कीं। उन्होंने पुर्तगालियों पर विजय पाई और वह पूर्व में सबसे प्रभावशाली यूरोपीय शक्ति के रूप में उभरे। भारत में उनका प्रमुख केंद्र पुलीकट था, बाद में उन्होंने इसे बदल कर नागापट्टनम् को अपना प्रमुख केंद्र बनाया। 17वीं सदी के मध्य में, अंग्रेज एक बड़ी

औपनिवेशिक शक्ति के रूप में उभरने लगे। एंग्लो-डच प्रतिद्वंद्विता लगभग सात दशकों तक चली। इस दौरान, एक एक करके डचों की सारी बस्तियों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

अंग्रेज

इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ द्वारा जारी चार्टर के तहत सन् 1600 में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई थी। 1609 में कप्तान हॉकिन्स सूरत में अंग्रेजी व्यापार केंद्र स्थापित करने की अनुमति लेने के लिए जहांगीर के शाही दरबार में आया था। लेकिन, पुर्तगाली दबाव के कारण मुगल सम्राट ने इसे अस्वीकार कर दिया था। बाद में 1612 में, जहांगीर ने अंग्रेजों को एक फरमान (अनुमति पत्र) जारी किया और उन्होंने 1613 में सूरत में एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया। 1615 में इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम का राजदूत सर थॉमस रो भारत आया। उसने जहांगीर से भारत के विभिन्न हिस्सों में अंग्रेजी व्यापारिक कारखाने लगाने की अनुमति ली।

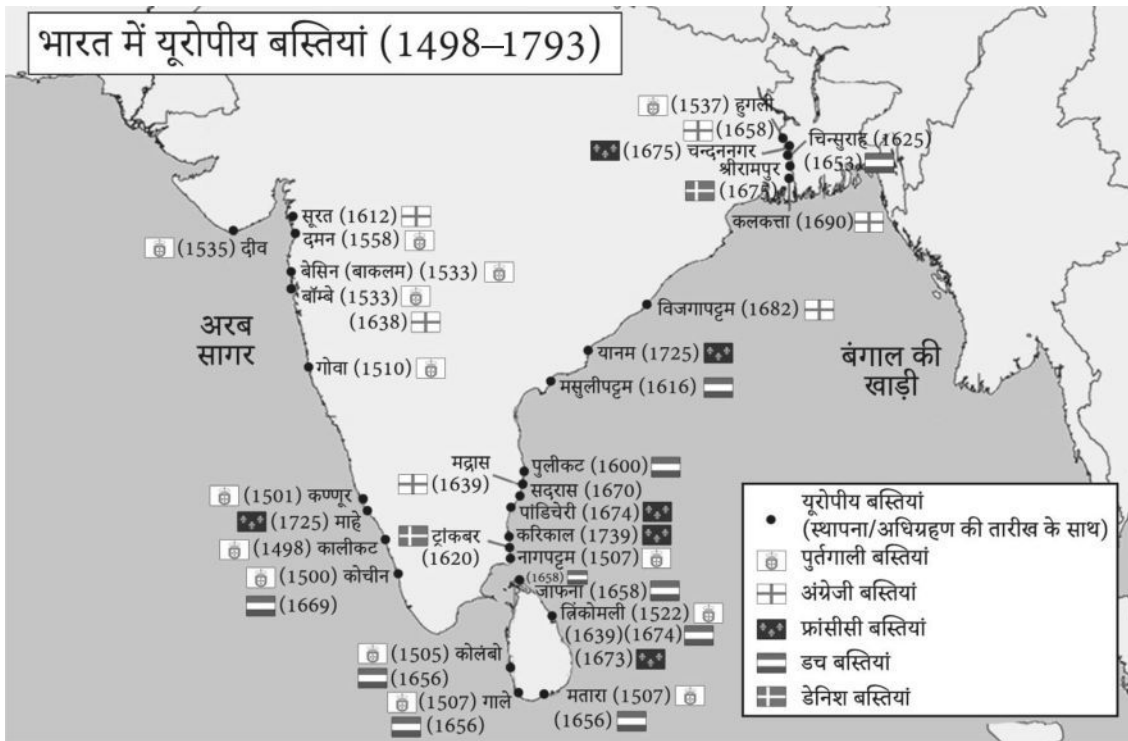
1619 तक अंग्रेजों ने आगरा, अहमदाबाद और बड़ौदा में अपने कारखाने स्थापित कर लिए थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इंग्लैंड के राजा, चार्ल्स द्वितीय से बॉम्बे का अधिग्रहण किया। 1639 में, फ्रांसिस डे ने मद्रास शहर की स्थापना की, जहां फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण हुआ। सन् 1690 में, जॉब चारनॉक द्वारा सुतानुती नामक स्थान पर एक अंग्रेजी कारखाने की स्थापना की गई। बाद में, यह स्थान कलकत्ता शहर के रूप में विकसित हुआ। इस शहर में फोर्ट विलियम का निर्माण किया गया था। कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बन गया। बॉम्बे, मद्रास और कलकत्ता अंग्रेजों की तीन प्रमुख बस्तियां बन गई थीं।

फ्रांसीसी

फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन 1664 में जीन बैप्टिस्ट कोलबर्ट ने किया था। कोलबर्ट, लुई 14 का एक मंत्री था। भारत में पहला फ्रांसीसी कारखाना सूरत में फ्रांसिस कैरो द्वारा स्थापित किया गया था। बाद में, मसूलिपटनम में एक अन्य कारखाना स्थापित किया गया। 1673 में फ्रांकोइस मार्टिन ने पॉन्डिचेरी की स्थापना की। भारत में अन्य फ्रांसीसी कारखाने कराईकल, माहे और चन्दननगर में थे। फ्रांकोइस मार्टिन पॉन्डिचेरी का पहला गवर्नर था। पॉन्डिचेरी भारत में फ्रांसीसी शक्ति का केंद्र था।

डेनिश

डेनमार्क ने भी भारत में व्यापारिक बस्तियों की स्थापना की। उन्होंने 1620 में ट्रानक्वूबार (वर्तमान तमिलनाडु राज्य में) में बस्ती की स्थापना की। भारत में एक और महत्वपूर्ण डेनिश बस्ती बंगाल में श्रीरामपुर थी। श्रीरामपुर उनका प्रमुख केंद्र था। वे खुद को भारत में मजबूत करने में नाकाम रहे और 1896 में उन्होंने अपनी सभी बस्तियां अंग्रेजों को बेच दीं।



अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिद्वन्द्विता

18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में, अंग्रेज और फ्रांसीसी भारत में अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने में जुटे हुए थे। दोनों शक्तियों ने मुगल साम्राज्य के पतन के कारण, भारत में हो रही राजनीतिक उथल-पुथल का फायदा उठाया। भारत में अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिद्वन्द्विता कर्नाटक और बंगाल में देखने को मिली।

कर्नाटक युद्ध

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण निज़ाम-उल-मुल्क ने दक्कन में स्वतंत्र रियासत की स्थापना की। कर्नाटक क्षेत्र भी निज़ाम के प्रभुत्व के अंतर्गत था। कर्नाटक के राजा ने निज़ाम के आधिपत्य को स्वीकार किया था। 1740 में, यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ। इस युद्ध में इंग्लैंड और फ्रांस एक दूसरे के विरुद्ध लड़े। भारत में भी उनका संघर्ष जारी रहा।

पॉन्डिचेरी के फ्रांसीसी गवर्नर जोसेफ़ फ्रैक्वाय डूप्ले ने 1746 में अंग्रेजों पर हमला किया और इस प्रकार प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-1748) प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजी सेना ने मद्रास के निकट अड्यार की लड़ाई में फ्रांसीसियों को हरा दिया था।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754) में, डूप्ले ने मुजफ्फर जंग जोकि हैदराबाद का निज़ाम बनना चाहता था और चन्दा साहब जोकि अर्काट (तमिलनाडु में) के सिंहासन पर बैठना चाहता था, को समर्थन दिया। उनके गठबंधन ने अनवर उद्दीन को पराजित किया और उसे मार डाला। अनवर उद्दीन पहले कर्नाटक युद्ध में अंग्रेजों के

साथ था। इस बीच, ब्रिटिश कमांडर रॉबर्ट क्लाइव ने अर्काट पर कब्जा कर लिया। उसने फ्रांसीसियों को भी बुरी तरह से पराजित किया। इस बीच डूप्ले की जगह गोडेहू (Godeheu) को फ्रांसीसी गवर्नर के रूप में नियुक्त कर दिया गया। युद्ध फ्रांसीसियों की हार के साथ समाप्त हो गया।

यूरोप में सात वर्षीय युद्ध (1756–1763) के कारण तीसरा कर्नाटक युद्ध (1758–1763) भारत में हुआ। काउंट दे लाली फ्रांसीसी सैनिकों का कमांडर था। 1760 में ब्रिटिश जनरल सर आयर कूट ने उसे वांडीवाश के युद्ध में हराया। इससे अगले ही वर्ष, ब्रिटिश सैनिकों ने पॉन्डिचेरी पर कब्जा कर लिया और उसे नष्ट कर दिया था। 1763 में पेरिस की संधि के साथ सात वर्षीय युद्ध समाप्त हुआ।

तीसरा कर्नाटक युद्ध भी सात वर्षीय युद्ध के साथ ही समाप्त हुआ। फ्रांसीसी कंपनी ने पॉन्डिचेरी, कराईकल, माहे और यनम तक अपनी गतिविधियों को सीमित करने के लिए सहमति व्यक्त की। इस प्रकार, भारत में अंग्रेज-फ्रांसीसी प्रतिद्वन्द्विता अंग्रेजों की सफलता तथा फ्रांसीसियों की असफलता के साथ समाप्त हुई।

फ्रांसीसी विफलता के निम्नलिखित कारण थे:

1. अंग्रेजों की वाणिज्यिक और नौसेनिक श्रेष्ठता।
2. फ्रांसीसी सरकार से समर्थन की कमी।
3. फ्रांसीसियों का आधार केवल दक्षिण भारत में था, जबकि अंग्रेजों को समृद्ध तथा मजबूत बंगाल का समर्थन था।
4. अंग्रेजों के तीन महत्वपूर्ण बंदरगाहें—कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास थे, जबकि फ्रांसीसियों का केवल एक ही बंदरगाह पांडिचेरी था।
5. फ्रांसीसी जनरलों में आपसी मतभेद थे।
6. यूरोपीय युद्धों में इंग्लैंड की जीत ने भारत में फ्रांसीसियों को कमजोर कर दिया।

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना

बंगाल भारत के सबसे उपजाऊ तथा विकसित क्षेत्रों में से एक था। बंगाल में अंग्रेजों के प्रभुत्व ने भारत में अंग्रेजी शासन के विस्तार की नींव रखी। बंगाल के नवाब, सिराजुद्दौला और अंग्रेजों के बीच संघर्ष के परिणामस्वरूप 23 जून 1757 को प्लासी का युद्ध हुआ।

इस युद्ध में ब्रिटिश सेना के कमांडर रॉबर्ट क्लाइव ने नवाब की सेना को हराया। अंग्रेज यह युद्ध बहुत आसानी से जीत गए क्योंकि नवाब की सेना का कमांडर, मीर जाफर अंग्रेजों के साथ मिला हुआ था। प्लासी युद्ध में अंग्रेजों की जीत ने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव रखी।

प्लासी के युद्ध के बाद, मीर जाफर (1757–1760) को बंगाल का नवाब बनाया गया। लेकिन कंपनी की अनुचित मांगों के कारण, मीर जाफर और ईस्ट इंडिया कंपनी में मतभेद शुरू हो गए; जिसके चलते मीर जाफर ने डच ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संबंध स्थापित करने की कोशिश की। अंग्रेजों ने चिनसुरा में डच सेनाओं को हराया और मीर जाफर के स्थान पर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया। मीर कासिम 1760 से 1763 तक बंगाल का नवाब रहा। मीर जाफर मीर कासिम का ससुर था।

बाद में मीर कासिम ने अंग्रेजों के साथ बक्सर का युद्ध किया। 1764 में, अंग्रेजों ने बक्सर की लड़ाई में अवध के नवाब, मुगल सम्राट (शाह आलम द्वितीय) तथा बंगाल के नवाब की संयुक्त सेनाओं को हराया। शुजाउद्दौला (1754–1775) अवध का नवाब था।

नतीजतन, भारत में अंग्रेजी सेना का वर्चस्व स्थापित हो गया। 1765 में इलाहाबाद की संधि हुई, जिसके अनुसार मुगल सम्राट ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की 'दीवानी' (राजस्व वसूलने का अधिकार) के अधिकार दिए।

भारत में औपनिवेशिक शक्तियों का प्रवेश और प्रस्थान	
डच	1605–1825
डैन	1620–1869
फ्रांसीसी	1668–1954
पुर्तगाली	1505–1961
अंग्रेज	1612–1947

पॉन्डिचेरी की अनोखी दास्तान: उपनिवेशीय शासन में निरंतर बदलाव

पॉन्डिचेरी (अब पुडुचेरी) पर कब्जा करने वाली सबसे पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थी, उन्होंने 1521 में पॉन्डिचेरी पर कब्जा किया। इसके बाद पॉन्डिचेरी पर डचों ने अधिकार कर लिया। 1674 में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने पॉन्डिचेरी में एक व्यापारिक केंद्र स्थापित किया। यह भारत में फ्रांसीसियों का प्रमुख केंद्र बन गया था। डचों ने 1693 में पॉन्डिचेरी पर कब्जा कर लिया, लेकिन 1699 में उन्होंने इसे रिजविक की संधि के तहत फ्रांस को लौटा दिया था।

अंग्रेज-फ्रांसीसी युद्ध (1742–1763) के दौरान पॉन्डिचेरी में शासन लगातार बदलता रहा। फ्रांस क्रान्ति (फ्रेंच रेवोल्यूशन) के चलते 1793 में अंग्रेजों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, लेकिन 1814 में इसे फ्रांस को लौटा दिया। पॉन्डिचेरी, माहे, यनम, कराईकल और चन्द्रनगर 1954 तक फ्रांसीसी भारत का हिस्सा बने रहे।

अभ्यास प्रश्न

- निम्नलिखित यूरोपीय शक्तियों में से कौनसी पूर्व-स्वतंत्र भारत में व्यापारियों के रूप में सबसे पहले आई थी?
 - डच
 - अंग्रेज
 - फ्रांसीसी
 - पुर्तगाली
- भारत से जाने वाली सबसे पहली यूरोपीय शक्ति कौनसी थी?
 - डच
 - अंग्रेज
 - फ्रांसीसी
 - पुर्तगाली

3. अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी गई बक्सर की लड़ाई में, निम्नलिखित में से कौन, संयुक्त सेनाओं का हिस्सा नहीं था?
- मीर कासिम
 - मीर जाफर
 - शुजाउद्दौला
 - शाह आलम द्वितीय
4. भारत में डचों ने अपना सबसे पहला कारखाना कहाँ लगाया था?
- सूरत
 - पुलीकट
 - कोचीन
 - दमन
5. भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर कर्नाटक युद्धों का क्या परिणाम हुआ?
- कर्नाटक युद्धों ने भारत में फ्रांसीसियों पर ब्रिटिश वर्चस्व स्थापित कर दिया।
 - कर्नाटक युद्धों ने साबित कर दिया कि अंग्रेजों के लिए भारत के देशी शासकों को पराजित करना मुश्किल था।
 - कर्नाटक युद्धों ने यूरोपीय शक्तियों को देशी शासकों के खिलाफ एकजुट किया।
 - उपरोक्त में से कोई भी नहीं।
6. मुगल सम्राट जहांगीर ने पहले अंग्रेजों को सूरत में कारखाना खोलने से मना क्यों कर दिया था?
- मुगल सम्राट भारत में ब्रिटिश आगमन के विरोध में था।
 - मुगल सम्राट पर पुर्तगालियों का दबाव था।
 - मुगल सम्राट स्थानीय व्यापार और ब्रिटिश वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं चाहता था।
 - उपरोक्त में से कोई भी नहीं।
7. बक्सर की लड़ाई क्यों लड़ी गई?
- शाह आलम द्वितीय, अवध के नवाब और बंगाल के नवाब को दंड देना चाहता था।
 - मीर कासिम ने अंग्रेजों के खिलाफ शाह आलम द्वितीय तथा शुजाउद्दौला के साथ हाथ मिला लिया था।
 - मराठे अंग्रेजों को अवध से निकालना चाहते थे और शाह आलम द्वितीय को कारावास से मुक्त करवाना चाहते थे।
 - मराठों के हमलों से बचने के लिए शुजाउद्दौला को मीर कासिम और अंग्रेजों की मदद चाहिए थी।
8. जब भारत अंग्रेजों से आज़ाद हुआ, उस समय भारत में निम्नलिखित में से कौन सी यूरोपीय शक्तियों के अधिकारिक क्षेत्र मौजूद थे?
- पुर्तगाली
 - डच
 - फ्रांसीसी
 - डैन
- नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:
- 1 और 3
 - 1 और 2
 - 1, 2 और 3
 - 1 और 4
9. 18वीं शताब्दी बंगाल में ब्रिटिश शक्ति की स्थापना संबंधी, निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
- 1765 की इलाहाबाद की संधि ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल में दीवानी के अधिकार दिए।
 - राजस्व वसूली और न्याय प्रशासन के अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी के

<p>यूरोपीय अधिकारियों को सौंप दिए गए।</p> <p>नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:</p> <p>(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2</p> <p>10. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से पहले खुद को स्थापित किया था। 2. डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी प्रादेशिक क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिए थे। <p>ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों</p>	<p>(d) न तो 1 और न ही 2</p> <p>11. बंगाल में अंग्रेजों के आगमन के संबंध में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है?</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. 1690 में जॉब चारनॉक ने सुतानुती नामक जगह पर अंग्रेजी कारखाने की स्थापना की और कलकत्ता की नींव रखी। बाद में कलकत्ता ब्रिटिश-भारतीय साम्राज्य का आधार बन गया। 2. फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम के निकट एक किला बनाया। <p>नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:</p> <p>(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2</p>
---	--

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. वर्ष 1613 में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी को कहाँ एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति मिली? (2006)
 - (a) बंगलौर
 - (b) मद्रास
 - (c) मसूलीपट्टम
 - (d) सूरत
2. निम्नलिखित यूरोपीयियों में से कौन-सा एक स्वतन्त्रता-पूर्व भारत में व्यापारी के रूप में सबसे अंत में आए? (2007)
 - (a) डच
 - (b) इंग्लिश
 - (c) फ्रांसीसी
 - (d) पुर्तगाली
3. निम्नलिखित किलों में से, ब्रिटिश ने किसका सबसे पहले निर्माण किया? (2007)
 - (a) फोर्ट विलियम
 - (b) फोर्ट सेंट जार्ज
 - (c) फोर्ट सेंट डेविड
 - (d) फोर्ट सेंट एंजेलो

<p>4. पॉन्डिचेरी (वर्तमान पुदुच्चेरी) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <p style="text-align: right;">(2010)</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. पॉन्डिचेरी पर कब्जा करने वाली पहली यूरोपीय शक्ति पुर्तगाली थे। 2. पॉन्डिचेरी पर कब्जा करने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति फ्रांसीसी थे। 	<p>3. अंग्रेजों ने कभी पॉन्डिचेरी पर कब्जा नहीं किया।</p> <p>उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?</p> <ol style="list-style-type: none"> (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3 (c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3
--	--

उत्तर कुंजी

अभ्यास प्रश्न

1. (d) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (a) 6. (b) 7. (b) 8. (a) 9. (a)
10. (c) 11. (a)

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. (d) 2. (c) 3. (b) 4. (a)

किसी अन्य देश पर पूर्ण या आंशिक राजनीतिक नियंत्रण करने और आत्म-संवर्धन के उद्देश्य से उसका आर्थिक शोषण करने की नीति को उपनिवेशवाद कहते हैं। भारत में ब्रिटिश शासन की प्रकृति औपनिवेशिक थी।

भारत में उपनिवेशवाद एक नियमित प्रक्रिया थी और सामान्य तौर पर इसे तीन चरणों में बांटा जाता है:

उपनिवेशवाद के चरण

1. वाणिज्यिक चरण (1717–1813): इस चरण के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने विदेशी व्यापार के प्रत्येक लेन-देन पर कर देने के बजाए वार्षिक राशि का भुगतान करके मुगल राजा से निशुल्क व्यापार का अधिकार हासिल कर लिया था।

इस अधिकार के मुताबिक ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'दस्तक' नामक पास जारी किए। 'दस्तक' को दिखा कर व्यापारी कर दिए बिना व्यापार कर सकते थे। दस्तक उन व्यापारियों को जारी किए गए थे, जो ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से व्यापार करते थे। इसके अलावा, अवैध रूप से दस्तक उन व्यापारियों को भी जारी किए गए थे, जो कि ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से व्यापार नहीं करते थे। इससे मुगल खज़ाने को नुकसान हुआ और ईस्ट इंडिया कंपनी को बहुत फायदा हुआ।

2. औद्योगिक पूंजीवादी चरण (1813 से स्वतंत्रता तक): इस चरण के दौरान, कपास, जूट, मसाले, तम्बाकू, चाय आदि जैसे कच्चे माल भारत से इंग्लैंड में निर्यात किए जाते थे। संसाधित माल जो कच्चे माल की तुलना में अधिक महंगा था, वापस आयात किया जाता था और भारत में बेचा जाता था। यह भारत के आर्थिक शोषण का कारण बना।

3. वित्तीय पूंजीवादी चरण (1858 से स्वतंत्रता तक): इस चरण के दौरान, इंग्लैंड में अमीर लोगों को भारत में, प्रतिफल के वायदे (Guaranteed Return on Investment) के साथ, निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। उस निवेश का इस्तेमाल भारत में रेलवे, डाक, टेलीग्राफ आदि के निर्माण में किया गया।

निवेश पर प्रतिफल, वित्तीय पूंजीवादी चरण में भारत से धन के निकास (ड्रेन ऑफ वेल्थ) का एकमात्र बड़ा कारण बना।



भू-राजस्व व्यवस्था (Land Revenue System)

अंग्रेजों ने भारत के विभिन्न भागों में तीन प्रकार की भू-राजस्व व्यवस्था की शुरुआत की। इन भू-राजस्व व्यवस्थाओं की शुरुआत का उद्देश्य उच्च और परेशानी मुक्त भूमि राजस्व संग्रह करना था।

1. जमींदारी व्यवस्था

1793 में लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा और पूर्वी उत्तर प्रदेश में जमींदारी व्यवस्था लागू की थी। 'जमींदारी व्यवस्था' को 'इस्तमरारी व्यवस्था' भी कहा जाता है।

इस व्यवस्था में प्रत्यक्ष रूप से जमींदारों के साथ स्थाई बंदोबस्त किया जाता था। जमींदारों को ईस्ट इंडिया कंपनी को एक निश्चित वार्षिक राशि (एकत्रित लगान का 10/11 भाग) का भुगतान करना होता था और बदले में उन्हें किसानों से लगान एकत्र करने का अधिकार दिया गया था।

चूंकि लगान का एक बड़ा हिस्सा अंग्रेजों द्वारा विनियोजित किया गया था, इसलिए जमींदार अक्सर किसानों से बहुत अधिक लगान एकत्र करते थे और लगान इकट्ठा करने के तरीके बेहद कठोर थे।

उच्च दरों पर लगान इकट्ठा करने के कारण जमींदार अमीर बन गए थे, लेकिन उन्हें कृषि के विकास में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसी समय, किसान और गरीब होते चले गए, परिणामस्वरूप कृषि के निवेश में गिरावट से कृषि पतन की तरफ बढ़ने लगी।

2. रैयतवाड़ी व्यवस्था

रैयतवाड़ी व्यवस्था की योजना अलेक्जेंडर रीड और सर थॉमस मुनरो ने बनाई थी और मद्रास के तत्कालीन गवर्नर सर थॉमस मुनरो द्वारा 1820 में इसे लागू किया गया था।

रैयतवाड़ी व्यवस्था में, सरकार ने रैयतों अर्थात् किसानों से प्रत्यक्ष बंदोबस्त किया। रैयतवाड़ी व्यवस्था में ब्रिटिश किसानों से सीधे राजस्व एकत्र करते थे, लेकिन राजस्व की दर बहुत अधिक थी और राजस्व बहुत कठोरता से वसूला जाता था। रैयतवाड़ी व्यवस्था में असिंचित भूमि पर राजस्व की दर 50% उपज तथा सिंचित भूमि पर 60% उपज तक थी।

नतीजतन, किसानों को अक्सर साहूकारों से उधार लेना पड़ता था जो बहुत अधिक ब्याज लेते थे।

इस प्रकार, रैयतवाड़ी व्यवस्था के अधीन, अधिकांश किसान गरीब होते गए। कृषि गैर-लाभकारी बन गई और कृषि के निवेश में निरंतर गिरावट होती गई।

3. महालवाड़ी व्यवस्था

1822 में, लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पंजाब और पश्चिमी यू.पी. में महालवाड़ी व्यवस्था की शुरुआत की थी। बाद में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने इस व्यवस्था में पूरी तरह संशोधन किए। महालवाड़ी शब्द दो शब्दों को जोड़कर बना हुआ है, जिसमें 'महाल' का अर्थ है गाँव, मोहल्ला, कस्बा इत्यादि और 'वाड़ी' का आशय है प्रबंधन। महालवाड़ी व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि को 'महाल' में बांटा गया था। प्रत्येक 'महाल' में एक या एक से अधिक गाँव शामिल किये गये थे। महालों का सामूहिक रूप से भूराजस्व बन्दोबस्त किया जाता था।

इस व्यवस्था के अन्तर्गत किसानों को जमीन पर स्वामित्व अधिकारों की मान्यता थी लेकिन गाँव के किसी प्रतिष्ठित परिवार को 'महालदार' नियुक्त किया जाता था।

इन महालदारों को कम्पनी द्वारा अधिकार प्रदान किये गये कि वे प्रत्येक किसान का राजस्व निश्चित करें और राजस्व एकत्र करके कम्पनी को जमा करें।

कई बार महालदार किसानों का शोषण करते थे तथा उनका भू-राजस्व मनमाने ढंग से निश्चित करते थे।

कृषि का व्यापारीकरण

अंग्रेजों ने खाद्य फसलों की बजाए कपास, जूट, तंबाकू, चाय, नील, अफीम आदि जैसी वाणिज्यिक या नकदी फसलों तथा रेशम, शोरा, आदि वस्तुओं को बढ़ावा दिया। शोरा का इस्तेमाल ब्रिटेन में बारूद बनाने के लिए किया जाता था। इससे खाद्य फसलों के अधीन क्षेत्रों में गिरावट आई और उनके उत्पादन में कमी आई।

खाद्य फसलों की बजाए वाणिज्यिक फसलों को प्राथमिकता इसलिए दी गई थी क्योंकि खाद्य फसलों की तुलना में वाणिज्यिक फसलों से अधिक राजस्व संग्रह किया जा सकता था। इसके अलावा, ब्रिटेन के उद्योगों को वाणिज्यिक फसलों की आवश्यकता थी या इन फसलों को अन्य देशों में भी बेचा जा सकता था। यहां तक की, भू-राजस्व के बाद राजस्व का अन्य महत्वपूर्ण साधन अफीम की खेती था।

निष्कर्ष

ब्रिटिश काल में भारत की एक आत्म समृद्ध कृषि अर्थव्यवस्था थी। लेकिन, अंग्रेजों की कृषि के प्रति खराब नीतियों के कारण, भारत एक अकालों की भूमि बन गया था। 1943 का बंगाल का अकाल ब्रिटिश युग का सबसे भयानक अकाल था। इसमें भूख और हैजा, मलेरिया, चेचक, पेचिश तथा काला-अजार जैसी बीमारियों के कारण लगभग 2 करोड़ 10 लाख लोग मारे गए थे। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों जैसे कि कुपोषण, जनसंख्या विस्थापन, गंदगी का फैलना, स्वास्थ्य की देखभाल न होना इत्यादि ने भी मरने वालों की संख्या में वृद्धि की।



बंगाल का अकाल, 1943

भारतीय उद्योग पर ब्रिटिश नीतियों का प्रभाव

ब्रिटिश नीतियों का भारत के उद्योग पर दोहरा प्रभाव पड़ा:

1. भारत का विऔद्योगिकीकरण (Deindustrialization)

ब्रिटिश काल के दौरान, भारत में उत्पादन हस्तशिल्प से किया जाता था। आधुनिक कारखानों की सख्त कमी थी। हस्तशिल्प से दिन-प्रतिदिन उपयोग होने वाली वस्तुएँ तथा विलासिता की वस्तुएँ जैसे कि महंगे शॉल, कालीन, लकड़ी की नक्काशी आदि का उत्पादन किया जाता था। इस उत्पादन की मांग विभिन्न कारणों से ग़स्त हुई:

- विलासिता की वस्तुओं के मुख्य संरक्षक रियासतों के शासक थे। कई रियासतों पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया था या वे ब्रिटिश शासन के दौरान प्रतिकूल वित्तीय स्थिति से पीड़ित थी।
- भारतीय वस्तुएँ इंग्लैंड के कारखानों में उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता और कीमत का मुकाबला नहीं कर पाईं।
- शिक्षित वर्गों को लगा कि इन महंगी वस्तुओं पर खर्च करने का मतलब पैसे की बर्बादी करना है।
- इन वस्तुओं के निर्माता, अर्थात्, स्थानीय कारीगरों में संगठनात्मक कौशल नहीं था। नतीजतन, वे बड़े औद्योगिक संगठन बनाने में विफल रहे।

2. आधुनिक कारखानों की अनुपस्थिति

भारत में अंग्रेजों ने आधुनिक कारखाने नहीं लगाए और ना ही अंग्रेजों ने भारतीयों द्वारा किसी आधुनिक उद्योग की स्थापना के लिए कोई प्रयास किया। इसके इलावा भारतीय उत्पादन को इंग्लैंड के बड़े कारखानों में बने उत्पादन से मुकाबला करना पड़ता था। इसलिए, भारत में स्थानीय कारखानों की सफलता की संभावना नहीं थी। फलस्वरूप, ब्रिटिश काल के दौरान भारत में बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण लगभग नामुमकिन था।

धन के बहिर्गमन का सिद्धांत या धन के

निष्कासन का सिद्धांत (Theory of Drain of wealth)

यह सिद्धांत सर्वप्रथम दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। उन्हें 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ़ इंडिया' (Grand Old Man of India) और 'भारतीय राजनीति के पितामह' के रूप में भी जाना जाता है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि भारत की गरीबी का कारण, आंतरिक कारक नहीं बल्कि औपनिवेशिक शासन है। 2 मई 1867 को लंदन में प्रकाशित अपने पहले पत्र "इंग्लैंड'स ड्यूटीस टू इंडिया" (England's Duties to India) में उन्होंने भारत के धन की निरंतर हानि और बड़े निवेशों से भारत के संसाधनों को विकसित करने की आवश्यकता का उल्लेख किया। उन्होंने 'पॉवर्टी ऐंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' (Poverty and Unbritish Rule in India), 'वान्ट्स एण्ड मीन्स ऑफ़ इण्डिया' (Wants and Means of India) और 'कॉमर्स ऑफ़ इण्डिया' (Commerce of India) जैसी अन्य साहित्यिक रचनाएं भी प्रकाशित कीं।

दादाभाई नौरोजी के अलावा, महादेव गोविंद रानाडे (एम.जी. रानाडे) ने भी धन के निष्कासन का सिद्धांत दिया। एम.जी.रानाडे नौरोजी के इस विचार से सहमत नहीं थे कि भारतीय समाज के पिछड़ेपन का जिम्मेदार धन का निष्कासन था। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज के पिछड़ेपन का कारण औद्योगिकीकरण का अभाव और पश्चिमी शिक्षा की कमी है। इसके अलावा, रमेश चंद्र दत्त (आर.सी.दत्त) ने 'भारत का आर्थिक इतिहास' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की। प्रमुख नेता लाला लाजपत राय ने अपनी 'इंग्लैंड'स डैब्ट टू इंडिया' (England's Debt to India.) नामक पुस्तक में ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभावों की आलोचना की।

धन के निष्कासन के सिद्धांत ने बताया कि कैसे भारत से इंग्लैंड में धन का निकास हो रहा था। धन के निष्कासन के सिद्धांत को आम जनता तक पहुंचाया गया। इस सिद्धांत ने लोगों में विदेशी वस्तुओं के प्रति घृणा की भावना पैदा की, जिसके परिणामस्वरूप स्वदेशी और बहिष्कार जैसे आंदोलनों का जन्म हुआ। इस प्रकार, धन के निष्कासन के सिद्धांत ने भारतीय राष्ट्रवाद को आर्थिक आधार प्रदान किया।

धन के निष्कासन के स्रोत

धन के निष्कासन के दो मुख्य स्रोत थे:

1. प्रत्यक्ष स्रोत

इन स्रोतों में भारत से इंग्लैंड को धन का प्रत्यक्ष हस्तांतरण शामिल है। इनमें शामिल हैं:

- ब्रिटिश अधिकारियों और सैन्य कर्मचारियों के वेतन, भत्ते, पेंशन की प्रकृति में प्रेषण।
- भारत में लगी निवेश-पूंजी पर प्रतिफल।
- सैन्य भंडार, रेलवे स्टॉक, आदि खरीदने के लिए आवश्यक राशि। यह सामान इंग्लैंड से खरीदा जाता था।
- भारत सचिव के कार्यालय (India Office) का खर्च: भारत सचिव का कार्यालय लंदन, इंग्लैंड में था। इस कार्यालय का खर्चा बहुत ज्यादा था। यह खर्चा भारतीय राजकोष से जाया करता था। इस खर्च को "होम चार्ज" कहा जाता था।

2. अप्रत्यक्ष स्रोत

इसमें व्यापार के माध्यम से धन का हस्तांतरण, भारत में अत्यधिक खर्चीला अंग्रेज प्रशासन, अंग्रेज साम्राज्य का विस्तार करने के लिए युद्ध आदि शामिल थे।

इन स्रोतों के अलावा, जवाहरात और आभूषण, चित्रकारी, मूर्तियां, आदि के रूप में भारत की सांस्कृतिक विरासत, अंग्रेज़ इंग्लैंड ले गए थे।



दादाभाई नौरोजी

दादाभाई नौरोजी ब्रिटिश संसद के सदस्य बनने वाले पहले एशियाई तथा बॉम्बे के एल्फिन्स्टन इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर बनने वाले पहले भारतीय थे। एल्फिन्स्टन इंस्टीट्यूट में उन्होंने गणित और प्राकृतिक दर्शन की शिक्षा दी। वह 'ग्रेंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' और 'भारतीय राजनीति के पितामह' के रूप में भी जाने जाते थे।

उनका जन्म पारसी परिवार में हुआ था। जवानी में वह इंग्लैंड चले गए थे। वहां जाकर, उन्हें कामा एंड कंपनी में भागीदार बनाया गया। लेकिन, कंपनी के अनैतिक व्यवहारों से तंग आकर उन्होंने इस्तीफा दे दिया।

बाद में, उन्होंने अपनी खुद की कपास ट्रेडिंग कंपनी स्थापित की और राजनीति में सक्रिय रूप से शामिल हो गए। उन्हें लगा कि अंग्रेज भारत का शोषण कर रहे थे, इसलिए उन्होंने लोगों को शिक्षित करने के लिए ज्ञानप्रसारक मंडली की स्थापना की। इस मंडली की दो शाखाएँ थीं, एक मराठी ज्ञानप्रसारक मंडली और दूसरी गुजराती ज्ञानप्रसारक मंडली। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने 1851 में रहनुमा मजदायसन सभा की स्थापना की। आम आदमी को पारसी संकल्पनाएं स्पष्ट करने के लिए 1853 में उन्होंने एक पाक्षिक प्रकाशन 'रास्त गोफतार' अर्थात 'सत्य बोलने वाला' की स्थापना की।

उन्होंने अंग्रेजों को 'धन का निष्कासन-सिद्धांत' प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने बताया कि अंग्रेजों की नीतियों ने किस तरह भारत का शोषण किया और उसे एक गरीब देश में बदल दिया।

1867 में उन्होंने ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की। यह संस्था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्वज संस्था थी। 1880 के दशक में कुछ वर्षों के लिए वह इंग्लैंड चले गए, जहां उन्होंने 'वॉयस ऑफ इंडिया' नामक अखबार शुरू किया।

अभ्यास प्रश्न

- निम्नलिखित में से किसने सर्वप्रथम 'धन का निष्कासन' पद का प्रयोग किया था?
 - सुरेंद्रनाथ बनर्जी
 - बाल गंगाधर तिलक
 - दादाभाई नौरोजी
 - महात्मा गांधी
- दादाभाई नौरोजी के 'धन-निष्कासन' सिद्धांत में निम्नलिखित में से किस नेता ने विश्वास नहीं किया था?
 - बी.जी. तिलक
 - आर.सी. दत्त
 - एम.जी. रानाडे
 - सर सैय्यद अहमद खान
- 20वीं शताब्दी की शुरुआत में, निम्नलिखित में से किसने 'भारत का आर्थिक इतिहास' प्रकाशित किया?
 - दादाभाई नौरोजी
 - गोपाल कृष्ण गोखले
 - महादेव गोविंद रानाडे
 - रमेश चंद्र दत्त
- निम्नलिखित में से किसे ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया कहा जाता था?
 - आचार्य विनोबा भावे
 - दादाभाई नौरोजी
 - गोपाल कृष्ण गोखले
 - महादेव गोविंद रानाडे

5. भारत में ब्रिटिशों के राजस्व प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसे रैयतवाड़ी बंदोबस्त और उसके कार्यान्वयन के संबंध में जाना जाता है?
- थॉमस मुनरो
 - आर.एम. बर्ड
 - सर चार्ल्स नेपियर
 - जोनाथन डंकन
6. निम्नलिखित भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से किसने भारत की प्रति व्यक्ति आय का अनुमान लगाने का प्रयास किया था?
- गोपाल कृष्ण गोखले
 - फिरोज़ शाह मेहता
 - सुरेंद्रनाथ बनर्जी
 - दादाभाई नौरोजी
7. निम्नलिखित में से किसने 'वाँडिस ऑफ इंडिया' नामक अखबार शुरू किया था?
- भीखाजी कामा
 - दादाभाई नौरोजी
 - लाला हरदयाल
 - वी.डी.सावरकर
8. निम्नलिखित कथनों में से कौनसा कथन दादाभाई नौरोजी द्वारा लिखित पुस्तक 'पॉवर्टी ऐंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में प्रस्तुत किए गए 'धन निष्कासन सिद्धांत' को उचित रूप से परिभाषित करता है?
- भारत की राष्ट्रीय संपदा का एक हिस्सा ब्रिटेन में निर्यात किया जा रहा था, जिसके लिए भारत को कोई भौतिक लाभ नहीं मिला।
 - भारत के संसाधनों का उपयोग ब्रिटेन के हित में किया जा रहा था।
 - ब्रिटिश उद्योगपतियों को शाही सत्ता के संरक्षण के अधीन भारत में निवेश करने का अवसर दिया जा रहा था।
 - भारत में ब्रिटिश वस्तुओं का आयात किया जा रहा था और देश दिन-प्रतिदिन गरीब हो रहा था।
9. निम्नलिखित कथनों में से कौनसा कथन 'होम चार्ज' को स्पष्ट करता है?
- यह भारत सचिव के कार्यालय का खर्च था।
 - शहरी क्षेत्रों के गृह कर और ग्रामीण क्षेत्रों के कृषि कर।
 - भारत में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए निर्धारित निवेश राशि।
 - तैयार उत्पाद को इंग्लैंड से भारत ले जाने का शुल्क।
10. निम्नलिखित कथन पर विचार करें और नीचे दिए गए कूट की मदद से कथन में निर्दिष्ट व्यक्ति की पहचान करें:
- इंग्लैंड में रहते हुए, उन्होंने ब्रिटिश लोगों को भारत के शासकों के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करने का प्रयास किया। उन्होंने ब्रिटिश राज के अन्यायपूर्ण और दमनकारी शासन के अपने विरोध का समर्थन करने के लिए भाषण दिए और लेख प्रकाशित किए। 1867 में, उन्होंने ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की तथा इसके माननीय सचिव बने।
- फिरोज़शाह मेहता
 - मैरी कारपेंटर
 - दादाभाई नौरोजी
 - आनंद मोहन बोस
11. स्थायी बंदोबस्त में, ज़मीनदार किसानों को पट्टा (अधिकारपत्र) जारी करते थे। लेकिन, बहुत से ज़मीनदार इन पट्टों को जारी नहीं करते थे। इसका कारण था:
- किसानों को ज़मीनदारों पर भरोसा था।
 - ज़मीनदार जानबूझकर किसानों को पट्टे जारी करने से परहेज करते थे।

<p>(c) पट्टे जारी करने की जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार की थी।</p> <p>(d) उपरोक्त में से कोई भी नहीं।</p> <p>12. निम्नलिखित में से कौनसी स्थायी बंदोबस्त की विशेषता नहीं है?</p> <p>(a) स्थायी बंदोबस्त में भूमि का स्वामित्व जमींदारों को मिल गया था।</p> <p>(b) स्थायी बंदोबस्त ने किसानों के लगातार प्रथागत अधिभोग अधिकारों पर ध्यान दिया।</p> <p>(c) उच्च राजस्व मूल्यांकन का बोझ किसानों पर डाल दिया गया।</p> <p>(d) किसानों की स्थिति अत्यधिक निराशाजनक थी।</p> <p>13. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. ब्रिटिशों की सबसे बड़ी कॉलोनी भारत थी। 2. भारत ब्रिटिश निर्मित माल और निवेश के लिए एक बड़ा बाजार बन गया था। <p>नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:</p> <p>(a) केवल 1</p> <p>(b) केवल 2</p>	<p>(c) 1 और 2</p> <p>(d) न तो 1 और न ही 2</p> <p>14. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें: रैयतवाड़ी (भूमि राजस्व) व्यवस्था में,</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. छोटे किसानों के साथ एक प्रत्यक्ष बंदोबस्त किया गया था। 2. किसान एक निश्चित भूमि कर देते थे और उनको भूमि के स्वामित्व के सारे अधिकार दिए गए थे। यह कर राज्य की ओर से गांव के मुखिया द्वारा एकत्र किया जाता था। 3. यह बंदोबस्त एक निश्चित समय के लिए किया जाता था और इसका नवीनीकरण भी किया जाता था। इस बंदोबस्त के चलते रैयत यानी किसान को भूमि से नहीं निकाला जा सकता था। <p>उपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1</p> <p>(b) केवल 2 और 3</p> <p>(c) केवल 1 और 3</p> <p>(d) 1, 2 और 3</p>
---	--

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. निम्नलिखित में से किसने भारत के अंग्रेजी उपनिवेशी नियंत्रण की आलोचना में 'अन-ब्रिटिश' पदावली का उपयोग किया था?

(2008)

- (a) आनन्द मोहन बोस
- (b) बदरुद्दीन तैयबजी
- (c) दादाभाई नौरोजी

- (d) फिरोजशाह मेहता

2. भारत में उपनिवेशी शासन काल में "होम चार्ज" भारत से संपत्ति दोहन का महत्वपूर्ण अंग थे, निम्नलिखित में से कौन-सी निधि/निधियां "होम चार्ज" की संघटक थी/थीं?

(2011)

1. लंदन में इंडिया ऑफिस के भरण-पोषण के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।
2. भारत में कार्यरत अंग्रेज कर्मचारियों के वेतन तथा पेंशन देने हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।
3. भारत के बाहर हुए युद्धों को लड़ने में अंग्रेजों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली निधि।

निम्नलिखित कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(2012)

दादा भाई नौरोजी की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सर्वाधिक प्रभावी देन थी कि

1. उन्होंने इस बात को अभिव्यक्त किया कि ब्रिटेन, भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है
2. उन्होंने प्राचीन भारतीय ग्रंथों की व्याख्या की और भारतीयों में आत्म-विश्वास जगाया
3. उन्होंने सभी सामाजिक बुराइयों के निराकरण की आवश्यकता पर सर्वोपरि जोर दिया

उपयुक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2, और 3

4. रैयतवारी बन्दोबस्त के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(2012)

1. किसानों द्वारा लगान सीधे सरकार को दिया जाता था।
2. सरकार रैयत को पट्टे देती थी।
3. कर लगाने के पूर्व भूमि का सर्वेक्षण और मूल्य-निर्धारण किया जाता था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) 1, 2 और 3
- (d) कोई भी नहीं

5. निम्नलिखित में से कौन, भारत में उपनिवेशवाद का/के आर्थिक आलोचक था/थे? (2015)

1. दादाभाई नौरोजी
2. जी. सुब्रमण्य अय्यर
3. आर. सी. दत्त

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

नोट: गणपति सुब्रमण्य अय्यर (1855–1916) एक पत्रकार, सामाजिक सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 20 सितंबर 1878 को हिंदू समाचार पत्र शुरू किया। वह 20 सितंबर 1878 से अक्टूबर 1898 तक द हिंदू के मालिक, संपादक और प्रबंध निदेशक थे। उन्होंने अंग्रेज शासन के दौरान 'धन के निष्कासन' की भी व्याख्या की।

6. निम्नलिखित में से कौन, ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवाड़ी बंदोबस्त के प्रारंभ किए जाने से संबद्ध था/थे? (2017)

1. लॉर्ड कॉर्नवॉलिस
2. अलेक्जेंडर रीड
3. थॉमस मुनरो

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

7. आर्थिक तौर पर, 19वीं शताब्दी में भारत पर अंग्रेजी शासन का एक परिणाम था (2018)

- (a) भारतीय हस्त-शिल्पों के निर्यात में वृद्धि
- (b) भारतीयों के स्वामित्व वाले कारखानों की संख्या में वृद्धि
- (c) भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण
- (d) नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

8. 18वीं शताब्दी के मध्य इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के द्वारा बंगाल से निर्यातित प्रमुख पण्यपदार्थ (स्टेपल कमोडिटीज़) क्या थे?

(2018)

- (a) अपरिष्कृत कपास, तिलहन और अफीम
- (b) चीनी, नमक, जस्ता और सीसा
- (c) ताँबा, चांदी, सोना, मसाले और चाय
- (d) कपास, रेशम, शोरा और अफीम

उत्तर कुंजी

अभ्यास प्रश्न

- | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|--------|--------|--------|--------|
| 1. (c) | 2. (d) | 3. (d) | 4. (b) | 5. (a) | 6. (d) | 7. (b) | 8. (a) | 9. (a) |
| 10. (c) | 11. (b) | 12. (b) | 13. (c) | 14. (c) | | | | |

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

- | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| 1. (c) | 2. (a) | 3. (a) | 4. (c) | 5. (d) | 6. (c) | 7. (c) | 8. (d) |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|

समाधान

अध्याय-1 यूरोपियों का आगमन

अभ्यास प्रश्न

1. (d) पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा 17 मई 1498 को केप ऑफ़ गुड होप से होते हुए कालीकट बंदरगाह पहुंचा था।
3. (b) 1764 में बक्सर की लड़ाई में, अंग्रेजों ने अवध (ओध) के नवाब, मुगल सम्राट (शाह आलम द्वितीय) और बंगाल के नवाब (मीर कासिम) की संयुक्त सेनाओं को हरा दिया था।
4. (b) भारत में, डचों ने 1605 में मसुलिपट्टनम में पहला कारखाना स्थापित किया, इसके बाद 1610 में पुलिकट, 1616 में सूरत, 1641 में बिमिलीपट्टम और 1653 में चिनसुरा में कारखानों की स्थापना की। उत्तर विकल्पों में से, विकल्प (b) - पुलिकट सबसे अधिक उपयुक्त विकल्प है।
5. (a) कर्नाटक युद्ध सैन्य संघर्षों की एक श्रृंखला थी जिसमें कई नाममात्र स्वतंत्र शासकों और फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच एक राजनीतिक और सैन्य संघर्ष शामिल था। इन सैन्य संघर्षों के परिणामस्वरूप, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के भीतर यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के बीच अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।
6. (b) मुगल राजा जहांगीर ने पुर्तगालियों के दबाव के कारण सूरत में ब्रिटिश कारखाने की स्थापना से इनकार कर दिया था।
8. (a) अंग्रेजों से आज़ादी मिलने के बाद भी भारत में कुछ औपनिवेशिक शक्तियों के क्षेत्र थे। पॉन्डिचेरी, माहे, यनम, कराइकल और चन्द्रनगर को फ्रांस से 1954 में आज़ादी मिली और गोवा को पुर्तगाल से 1961 में आज़ादी मिली।
9. (a) कथन 2 गलत है। राजस्व एकत्र करने के अधिकार (दीवानी अधिकार) ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपे गए थे लेकिन प्रशासनिक और न्यायिक अधिकार अभी भी बंगाल के नवाब के पास थे।
10. (c) कथन 1 सही है। डचों ने 1605 में आंध्र प्रदेश के मसूलीपट्टनम में अपना पहला कारखाना स्थापित किया था, जबकि अंग्रेजों ने अपने पहले व्यापारिक कारखाने की स्थापना 1613 में सूरत में की थी।
11. (a) कथन 2 गलत है। फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता में कोई किला नहीं बनवाया था। फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा निर्मित निकटतम किला चन्द्रनगर (पहले चंद्रनागोर) में था। चन्द्रनगर कलकत्ता से 35 कि.मी. दूर है।

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

2. (c) 1668 में आने वाली आखिरी यूरोपीय शक्ति फ्रांसीसी थी।
3. (b) 1639 में, फ्रांसिस डे ने मद्रास शहर की स्थापना की जहां सेंट जॉर्ज किले का निर्माण किया गया था।
4. (a) कथन 2 गलत है क्योंकि डच पॉन्डिचेरी पर कब्जा करने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति थी।
कथन 3 गलत है क्योंकि अंग्रेजों ने कई बार फ्रांसीसियों से पॉन्डिचेरी पर कब्जा किया। लेकिन, 1814 में, इसे फ्रांस को सौंप दिया गया था।

अध्याय-2 उपनिवेशवाद**अभ्यास प्रश्न**

1. (c) धन के निष्कासन का सर्वप्रथम प्रचार दादाभाई नौरोजी द्वारा किया गया था।
2. (d) सर सैय्यद अहमद खान धन के निष्कासन सिद्धांत में विश्वास नहीं करते थे। एम.जी. रानाडे ने धन के निष्कासन सिद्धांत में विश्वास किया। लेकिन, उन्होंने इसे भारत के पिछड़ेपन का सबसे प्रमुख कारण नहीं माना।
5. (a) रैयतवाड़ी व्यवस्था 1820 में थॉमस मुनरो द्वारा दक्षिण भारत तथा पश्चिम भारत में शुरू की गई थी।
6. (d) भारत की प्रति व्यक्ति आय की गणना करने का सबसे पहला प्रयास दादाभाई नौरोजी द्वारा 1867-68 में किया गया था। उनके अनुसार यह आय सालाना केवल 20 रूपए प्रति व्यक्ति थी।
7. (b) 1880 में दादा भाई नौरोजी इंग्लैंड गये थे। वहाँ से दादाभाई नौरोजी ने वॉयस ऑफ इंडिया नामक अखबार शुरू किया था।
9. (a) राज्य सचिव ब्रिटिश कैबिनेट का सदस्य थे तथा ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी थे। उसका कार्यालय लंदन में स्थित था, जिसे 'इंडिया ऑफिस' कहा जाता था। उनकी सहायता के लिए एक परिषद् थी। 'इंडिया ऑफिस' के खर्चों को 'होम चार्ज' कहा जाता था और 1919 तक इन खर्चों का भुगतान भारतीय खजाने से किया जाता था।
10. (c) कथन में संदर्भित व्यक्ति दादाभाई नौरोजी हैं।
11. (b) पट्टों को जानबूझकर ज़मीनदारों द्वारा किसानों को जारी नहीं किया गया था क्योंकि पट्टों को जारी करने का अर्थ किसानों के जमीन-संबंधी अधिकारों को मान्यता देना था।
14. (c) कथन 1 सही है। रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत, किसानों के साथ सीधा निपटान किया जाता था।
कथन 2 गलत है। रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत, ब्रिटिश सीधे किसानों से राजस्व एकत्रित करते थे, गांव के मुखिया के माध्यम से नहीं।
कथन 3 सही है। समय-समय पर रैयतों (किसानों) के साथ समझौता नवीनीकरण किया जाता था।

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

2. (a) "होम चार्ज" इंडिया ऑफिस के खर्च को कहते थे। इंडिया ऑफिस भारत सचिव का कार्यालय था और यह लंदन, इंग्लैंड में स्थित था।
4. (c) कथन 2 सही है। चूंकि कोई मध्यस्थ नहीं था, सरकार ने सीधे रैयतों को पट्टे दिए थे।
कथन 3 सही है। रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत, प्रत्येक क्षेत्र पर एक निश्चित कर तय किया गया था। सबसे पहले खेती की जाने वाली भूमि का माप लिया जाता था और उसके बाद, उस में होने वाली फसल का अनुमान लगाया जाता था। इस अनुमान के आधार पर निश्चित कर आकलन किया जाता था।

6. (c) कथन 1 गलत है। लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ज़मींदारी या स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था (1793) से जुड़े थे। कथन 2 और 3 सही हैं। अलेक्जेंडर रीड ने 1792 में रैयतवाड़ी व्यवस्था शुरू की थी, और 1801 से थॉमस मुनरो ने इसे जारी रखा था।
8. (d) कपास, रेशम, शोरा और अफीम

अध्याय-3 सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

अभ्यास प्रश्न

2. (b) राजा राममोहन राय ने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में तथा बाल विवाह और बहुविवाह के खिलाफ काम किया। सती के खिलाफ अपने संदेश का प्रचार करने के लिए, राममोहन राय ने 1821 में पहले बंगाली साप्ताहिक समाचार पत्र संवाद कौमुदी की स्थापना की। उन्होंने 1822 में एक फारसी भाषा अखबार मिरात-उल-अखबार की भी स्थापना की। वह इन समाचार पत्रों का प्रयोग भारतीय समाज को प्रबुद्ध करने तथा समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिए करते थे।
3. (c) राजा राधाकांत देव सामाजिक रूढ़िवाद के एक मजबूत समर्थक थे। जब सरकार ने सती प्रथा के अंत पर विचार किया, तो राधाकांत इसकी रक्षा के लिए आगे आए। जब दिसंबर 1929 में लॉर्ड विलियम बैंटिक की सरकार ने एक विनियमन द्वारा सती प्रथा को समाप्त कर दिया था, तो राधाकांत देव ने रूढ़िवादी हिंदू समाज की ओर से गवर्नर जनरल को याचिका पेश करके सरकार के इस कदम का विरोध किया था।
6. (d) सत्य शोधक सभा की स्थापना 1873 में ज्योतिबा फुले द्वारा महाराष्ट्र में की गई थी। सत्यशोधक समाज शूद्र वर्गों को शोषण और उत्पीड़न से मुक्त कराने के उद्देश्य से ब्राह्मणवाद विरोधी आंदोलन था।
7. (a) केशव चंद्र सेन ने भारत के ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया और देवेंद्रनाथ टैगोर ने आदि ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया।
9. (a) 1823 में राममोहन राय ने यह कहते हुए कि केवल एक ही भगवान है, कलकत्ता यूनिटेरियन समिति की स्थापना की थी।
12. (b) 1878 में, मैडम ब्लैवेत्स्की और कर्नल आल्काट न्यूयॉर्क छोड़कर भारत आए। उन्होंने बॉम्बे में सोसाइटी के मुख्यालय की स्थापना की और कर्नल ने दर्शकों को इकट्ठा करके, बॉम्बे और अन्य स्थानों पर भाषण दिए। 1879 में उन्होंने उत्तरी भारत का दौरा किया, और हर जगह गर्मजोशी से उनका स्वागत किया गया। उन्होंने "द थियोसोफिस्ट" (The Theosophist) प्रकाशित किया, जिसका पहला प्रकाशन 1 अक्टूबर 1879 को छपा था।
13. (d) पश्चिम जाने के बाद, विवेकानंद कोलंबो, श्रीलंका भी गए थे। भारत में विवेकानंद के आगमन पर, उन्होंने बड़े पैमाने पर यात्रा की और अल्मोड़ा समेत कई भारतीय राज्यों का दौरा किया। इस अवधि में उनके द्वारा दिए गए इन भाषणों को "लेक्चरस फ्रॉम कोलंबो टू अल्मोड़ा" के शीर्षक के तहत संकलित किया गया था। इसमें 17 भाषण शामिल हैं।
17. (b) असहयोग आंदोलन के अंत के बाद सांप्रदायिक हिंसा भड़कने के कारण, मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को धार्मिक आधारों पर व्यवस्थित करने और इस्लाम में धार्मिक रूपांतरण करने के लिए 'तंजीम' और 'तबलीग' आंदोलनों की शुरुआत की।

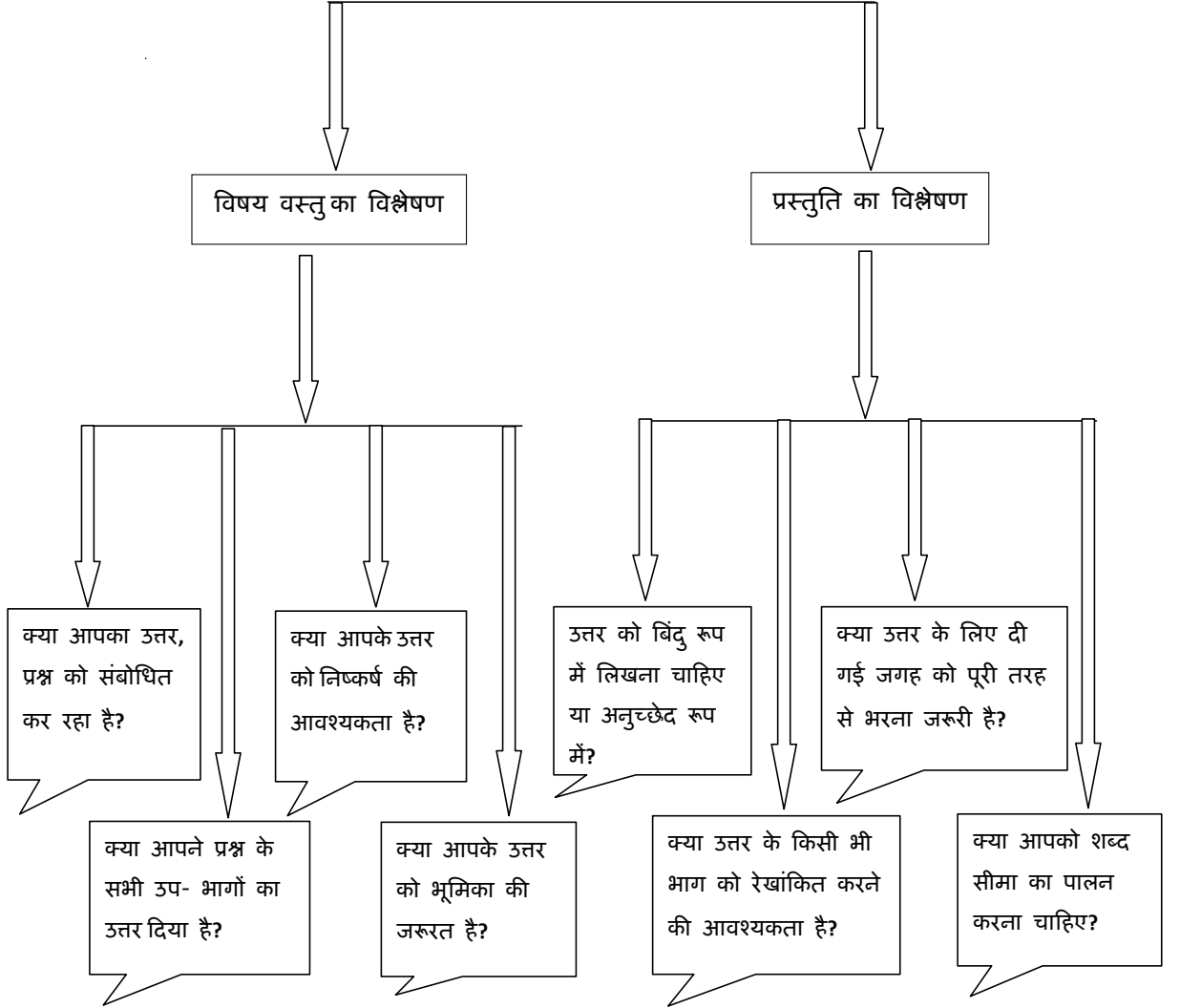
तंजीम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कुरान का पालन करने की वकालत करता है और आधुनिकता का खंडन करता है।

तबलीग एक सुन्नी इस्लामिक आंदोलन है। इसका केंद्र मुसलमानों को प्राथमिक सुन्नी इस्लाम में लौटने का आग्रह करना है; विशेष रूप से रीतियों, पोशाक, और व्यक्तिगत व्यवहार के मामलों में।

19. (a) 1936 में, डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने समाज में ब्राह्मण और पूंजीवादी संरचनाओं के खिलाफ 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' (आई.एल.पी.) का गठन किया। आई.एल.पी. ने भारतीय श्रमिक वर्ग के अधिकारों के लिए तर्क दिया और जाति व्यवस्था के अंत पर बल दिया।
20. (c) द नेटिव मैरिज ऐक्ट (अधिनियम III), 1872 में पारित किया गया था। इस अधिनियम ने अपरंपरागत अंतर्जातीय विवाह को वैध बनाया। इसने बहुविवाह पर प्रतिबंध लगा दिया। इसने लड़कियों की न्यूनतम विवाह योग्य उम्र 14 और लड़कों की 18 तय की।
23. (c) यह अनुच्छेद सर सैय्यद अहमद खान से संबंधित है। सैय्यद अहमद खान ने दोहरे उद्देश्यों के साथ अलीगढ़ आंदोलन की स्थापना की थी: आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और इस्लाम के उदारीकरण के माध्यम से मुसलमानों का आधुनिकीकरण।
उन्होंने यूनाइटेड पेट्रियोटिक एसोसिएशन की स्थापना की और मुसलमानों को कांग्रेस के बजाय यूनाइटेड पेट्रियोटिक एसोसिएशन में शामिल होने के लिए राजी किया। इससे कांग्रेस के प्रति उनका अविश्वास स्पष्ट था। उन्होंने अंग्रेजों के साथ सहयोग पर भी जोर दिया।
25. (d) कथन 1 गलत है। सर सैय्यद अहमद खान ने यूनाइटेड पेट्रियोटिक एसोसिएशन नामक एक राजनीतिक संगठन की स्थापना की। यह संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विरुद्ध था।
कथन 2 गलत है। उन्होंने अलीगढ़ में मोहम्मद एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की जो 1890 में अलीगढ़ विश्वविद्यालय में विकसित हुआ। अलीगढ़ आंदोलन ने मुसलमानों के बीच पश्चिमी शिक्षा शिक्षा का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
26. (b) कथन 1 गलत है। लाला लाजपत राय ने आर्य समाज की वेदों के अधिकार की अपील का समर्थन किया। क्योंकि वह हिंदू दर्शन और वेदों, जिस पर हिंदू दर्शन आधारित है, में दृढ़ विश्वास रखते थे।
कथन 3 सही है। महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद, विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज का गठन किया। सर्वोदय समाज में उन लोगों ने भाग लिया जो गांधीजी के सिद्धांतों में विश्वास रखते थे। सर्वोदय समाज के पहले कार्यों में विभाजन के शरणार्थियों की देखभाल और पुनर्वास था।
28. (b) कथन 1 सही है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बैथून स्कूल की स्थापना में जॉन इलियट बैथून की मदद की थी।
कथन 3 गलत है। राजा राममोहन राय के प्रयासों के कारण, गवर्नर जनरल ने सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून बनाया था।
29. (b) कथन 3 गलत है। टेबरनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन की स्थापना केशव चंद्र सेन के नेतृत्व में की गई थी।
31. (d) कथन 1 गलत है। राजा राममोहन राय अंतर्जातीय विवाह के कट्टर समर्थक थे, लेकिन पहला अंतर्जातीय विवाह केशव चंद्र सेन और उनके अनुयायियों द्वारा गुप्त रूप से किया गया था। हालांकि, कानूनी तौर पर पहली बार दर्ज किया गया अंतर्जातीय विवाह 1889 में ज्योतिबा फुले द्वारा आयोजित किया गया था।
कथन 2 गलत है। ब्रह्म धर्म को महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा संहिताबद्ध किया गया था।

मुख्य परीक्षा में उत्तर
लिखने की रणनीति

एक अच्छा उत्तर निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित है।



आइए, हम चित्र में दिए गए पहलुओं पर विचार करते हैं।

1. क्या आपका उत्तर, प्रश्न को संबोधित कर रहा है?

कम अंक आने का सबसे सामान्य कारण अभ्यर्थी की प्रश्न को समझने की क्षमता में कमी होना है।

क्या आपने कभी भी किसी अभ्यर्थी को यह कहते हुए सुना है कि मैंने लगभग सभी (या सभी) प्रश्नों के उत्तर दिए थे, लेकिन फिर भी मैं मुख्य परीक्षा पास नहीं कर सका?

संभवतया: आप ऐसे अभ्यर्थी से मिले हैं, जिसके उत्तरों ने प्रश्नों को संबोधित नहीं किया; अर्थात् उसने प्रश्नों को पूरी तरह से समझे बिना ही उत्तर लिख दिए।

प्रश्न को ठीक से कैसे संबोधित करना है, यह समझने के लिए हम प्रत्येक प्रश्न को दो भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं: 'कथन' और 'अनुदेश'।

उदाहरण के लिए

भारत में अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (2014)

उपर्युक्त प्रश्न में, 'भारत में अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के विभिन्न पक्ष' कथन है और अनुदेश 'समालोचनात्मक परीक्षण' है।

मान लीजिए कि एक उम्मीदवार भारत में अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों का वर्णन करता है। ऐसे उम्मीदवार के अंको में गंभीर रूप से कटौती की जाएगी।

समालोचनात्मक परीक्षण 'का अर्थ किसी मुद्दे या स्थिति को विभिन्न भागों में तोड़कर उन भागों का पूर्ण विश्लेषण करना है।

एक उम्मीदवार जो अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का समालोचनात्मक परीक्षण करता है, वह समग्र भारतीय अर्थव्यवस्था तथा कृषि और उद्योग जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए ब्रिटिश आर्थिक नीति की व्याख्या करेगा। उम्मीदवार नीति में बदलाव भी शामिल करेगा। इसके अलावा, उत्तर में न केवल आर्थिक नीति, बल्कि भारत पर इसका प्रभाव भी शामिल होना चाहिए।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि किसी विशेष अनुदेश को किसी प्रश्न के उप-भाग से जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, एक प्रश्न में कई अनुदेश हो सकते हैं, जैसे कि उप-भागों की संख्या।

पिछले वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)
समाधान के साथ

1. आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर, भारतीय महिलाएं भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी बनी रहीं। विवेचना कीजिए। (2013)

प्रश्न का विश्लेषण	
विवेचना कीजिए	अलग-अलग मुद्दों या विचारों को ध्यान में रखकर, विषय को विस्तार से लिखिए।
उप-भागों की संख्या	दो भाग भाग- 1 आयु, लिंग तथा धर्म के बंधनों से मुक्त होकर महिलाओं द्वारा स्वाधीनता संग्राम में भाग। भाग -2 भारत के स्वाधीनता संग्राम में महिलाएं अग्रणी बनी रहीं।
लिखने का तरीका	बिंदु रूप
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक है

आज़ादी के संघर्ष में भारतीय महिलाओं की भागीदारी व्यापक थी, इस बात का अनुमान निम्नलिखित कारकों से लगाया जा सकता है:

- आयु:** किशोरावस्था से वृद्धावस्था तक के सभी आयु समूहों की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। उदाहरण के तौर पर, रानी गाइदिन्ल्यू ने 16 वर्ष की उम्र में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू को 63 वर्ष की उम्र में गिरफ्तार किया गया था।
- लिंग:** उस समय के सामाजिक मानदंडों के अनुसार, महिलाओं का घर पर रहना ही उचित माना जाता था। महिलाओं को कमजोर लिंग माना जाता था। महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर इस तरह के रूढ़िवादी विचारों का उल्लंघन किया।
- धर्म:** राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने वाली महिलाएं विभिन्न धर्मों से थीं। उदाहरण के तौर पर- रानी गाइदिन्ल्यू ईसाई थी, भिकाजी कामा पारसी थी, सरोजिनी नायडू हिंदू थी।

महिलाओं की स्वाधीनता संग्राम में अग्रणीय भूमिका:

- जन भागीदारी:** राष्ट्रीय जन आंदोलन में पहली सामूहिक महिला भागीदारी असहयोग आंदोलन के दौरान देखी गई थी। इसने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए कई अन्य महिलाओं को प्रेरित किया।
- राजनीतिक जागरूकता:** महिलाओं ने आम लोगों में राजनीतिक जागरूकता लाने में मदद की। विशेष रूप से, एनी बेसेंट ने होम रूल आंदोलन के नेतृत्व में लोगों को स्वराज के बारे में जानकारी दी।
- क्रांतिकारी गतिविधियां:** कल्पना दत्त, प्रीतिलता वादेदार, भिकाजी कामा जैसी महिला क्रांतिकारियों ने अन्य महिलाओं को भारत की आज़ादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।
- आदिवासी महिलाओं की भागीदारी:** रानी गाइदिन्ल्यू की भागीदारी और गिरफ्तारी ने आदिवासी महिलाओं की भागीदारी के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

5. भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी: उषा मेहता एवं सुचेता कृपलानी ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान विभिन्न स्थानों पर हिंसक जन आंदोलन करने के लिए लोगों को संगठित किया।

ऊपर दिए गए तर्कों से, यह साबित होता है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी ने सभी मौजूदा बाधाओं को तोड़ दिया और आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. अनेक विदेशियों ने भारत में बसकर विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका का विश्लेषण कीजिए। (2013)

प्रश्न का विश्लेषण	
विश्लेषण	व्यक्ति, स्थिति या किसी अन्य चीज की प्रकृति, क्षमता या गुणवत्ता का आकलन करें।
उप-भागों की संख्या	एक
लिखने का तरीका	बिंदु रूप
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक

औपनिवेशिक युग के दौरान, कई विदेशियों ने भारत में रहकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भरपूर योगदान दिया:

1. एनी बेसेंट

- (a) एनी बेसेंट ने भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी की शुरुआत की। सोसाइटी ने एक तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से हिंदू धर्म को सबसे आध्यात्मिक धर्म माना, जिसने भारतीयों के बीच सांस्कृतिक गौरव की भावना पैदा की।
- (b) उन्होंने होम रूल आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसने लोगों को स्वराज या होम रूल के बारे में प्रेरित किया।
- (c) वह कांग्रेस सत्र की अध्यक्षता करने वाली पहली महिला थी, इसलिए वह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए अन्य महिलाओं के लिए एक आदर्श थी।
- (d) उन्होंने लखनऊ सत्र के दौरान उग्रपंथियों को फिर से कांग्रेस में शामिल होने के लिए मदद दी। इससे कांग्रेस मजबूत हो गई।

2. एलन ऑक्टेवियन ह्यूम

वह एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश सिविल सेवक थे। उन्होंने महत्वपूर्ण मुद्दों पर संकल्प पारित करने और आवश्यक सुधारों के लिए, प्रार्थनाओं और याचिकाओं के रूप में उन्हें आगे बढ़ाने के लिए तथा एक मंच पर संपूर्ण भारत से स्थानीय नेताओं को लाने के लिए कांग्रेस की स्थापना की थी।

3. विलियम वेडरबर्न

ह्यूम के साथ, कांग्रेस के गठन में इनका भी बहुत बड़ा योगदान रहा। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्य थे और 1890 से मृत्यु तक कांग्रेस की ब्रिटिश समिति के अध्यक्ष रहे। उन्होंने 'इंडिया' नामक पत्रिका प्रकाशित करने में मदद की और ब्रिटिश संसद में भारत के हितों को सामने रखा। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों

के बीच के मतभेदों को हल करने की कोशिश की। इसके इलावा, उन्होंने उदार राष्ट्रवादियों और उग्र राष्ट्रवादियों के बीच मतभेदों को सुलझाने का प्रयास किया।

4. जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बैथ्यून

बैथ्यून भारत में महिला शिक्षा के अग्रणी थे। उन्होंने 1849 में बंगाल में हिंदू बालिका विद्यालय की स्थापना की, जो बैथ्यून स्कूल के नाम से लोकप्रिय है। इसे 1879 में कॉलेज में बदल दिया गया था। यह एशिया का सबसे पुराना महिला कॉलेज है। शिक्षा ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार, कई विदेशियों ने शिक्षा के प्रावधान, जनता के बीच जागरूकता और यहां तक कि कांग्रेस के गठन से स्वतंत्रता संग्राम के प्रति महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. “अनेक प्रकार से लॉर्ड डलहौज़ी ने आधुनिक भारत की नींव रखी थी”। व्याख्या कीजिए।

(2013)

प्रश्न का विश्लेषण	
व्याख्या कीजिए	कुछ स्पष्ट करें; समझाएं।
उपभागों की संख्या	एक
लिखने का तरीका	बिंदु रूप
निष्कर्ष की आवश्यकता	आवश्यक नहीं है

लॉर्ड डलहौज़ी ने भारत के लिए दूरगामी प्रभावों वाले विभिन्न कदम उठाए। इन कदमों के कारण, उन्हें आधुनिक भारत के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। ये कदम थे:

1. भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए बुनियादी ढांचा स्थापित करना।
2. भारत में रेलवे की शुरुआत।
3. सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की शुरुआत।
4. डाक और टेलीग्राफ प्रणाली की स्थापना।
5. लोक-निर्माण विभाग की स्थापना।
6. बंदरगाहों का आधुनिकीकरण।
7. व्यपगत का सिद्धांत जिसके कारण 1857 का विद्रोह हुआ। विद्रोह ने भारत के राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया।
8. शिमला को ब्रिटिश भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया गया।

नोट: उपर्युक्त उत्तर में, विभिन्न तर्कों के लिए केवल शीर्षक दिए गए हैं। प्रत्येक शीर्षक के साथ एक पंक्ति के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

4. भारत में अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेज़ों की आर्थिक नीतियों के विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

(2014)